भाग 5 पारदारिक

अध्याय 1 स्त्री-पुरूष शीलावस्थापन प्रकरण

श्लोक (1)- तेषु साध्यत्वमनत्ययं गम्यत्वमायतिं वृत्ति चादित एवं परीक्षेत।।

अर्थ- पराई स्त्री के साथ संभोग करने की इच्छा रखने से पहले यह सोच लेना चाहिए कि वह स्त्री मिल सकती है या नहीं, उसको पाने में कहीं किसी तरह का संकट तो नहीं आ सकता, वह स्त्री संभोग करने के लायक है भी या नहीं, उसे अपने वश में करने के बाद उस पर मेरा असर कैसा पड़ेगा और मुझे उससे क्या फायदा होगा।

श्लोक (2)- यदा तु स्थानात्स्थानान्तरं कामं प्रतिपद्यमानं षश्येत्तदात्मशरीरोपघातत्राणार्थं परपरिग्रहनभ्युपगच्छेत्।।

अर्थ- जब पुरूष किसी पराई स्त्री को देखकर उत्तेजना में भर जाता है तो उसे उस समय सोचना चाहिए कि मै क्या कर रहा हूं। जब उसे महसूस हो कि अब मैं उससे संभोग करे बिना नहीं रह सकता तब जाकर उस स्त्री के साथ संभोग करना चाहिए।

श्लोक (3)- दश तु कामस्य स्थानानि।।

अर्थ- व्यवहार के लिए उत्तेजना के 10 स्थान है।

श्लोक (4)- चक्षुःप्रीतिर्मनःसंगः संकल्पोत्सापत्तिर्निद्राच्छेदस्तनुता विषयेभ्यो व्यावृत्तिर्जञ्त्रप्रणाश उन्मादो मूर्च्छा मरणमिति तेषां लिंगानि।

अर्थ- स्त्री को देखकर आंखों में प्यार छलक जाना, मन का भटक जाना, उसे हासिल करने की कसम लेना, रात में नींद न आना, शरीर से कमजोर होते जाना, सब चीजों से मन हट जाना, शर्म न करना, पागलपन पैदा हो जाना, बेहोशी छाना और मृत्यु हो जाना उत्तेजना के 10 स्थान हैं।

श्लोक (5)- तत्राकृतितो लक्षणत्श्च युवत्याः शीलं शौचं साध्यतां चण्डवेगतां च लक्षयेदित्पाचार्याः।।

अर्थ- जो पुरूष पराई स्त्री से संभोग करते है वह पहले ही स्त्री की सूरत और उसके हाव-भावों को देखकर पता कर लेते हैं कि वह पवित्र स्त्री है या पराए पुरुषों में दिलचस्पी रखने वाली स्त्री है।

श्लोक (6)- व्यबिचारादाकृतिलक्षणयोगानामिंगताकाराभ्यामेव प्रवृत्तिर्बोद्धव्या योषित इति वात्स्यायनः।।

अर्थ- आचार्य वात्स्यायन के मुताबिक स्त्री के शरीर और शरीर पर पड़े हुए निशानों को देखकर ही पता किया जा सकता है कि वह किस किस्म की स्त्री है।

श्लोक (7)- यं कश्चिदुज्ज्वलं पुरुषं दृष्टा स्त्री कामयते। तथा पुरुषोऽपिर योषितम्। अपेक्षया तु न प्रवर्तते इति गोणिकापुत्रः।।

अर्थ- आचार्य गोणिकापुत्र के अनुसार जिस तरह से स्त्री किसी बहुत ही सुंदर, गुणी, सभ्य और धनवान पुरूष को देखकर उस पर मोहित हो जाती है उसी तरह से पुरूष भी किसी सुंदर स्त्री को देखकर उस पर अपने दिलो-जान छिड़कने लगता है।

श्लोक (8)- तत्र स्त्रियां प्रति विशेषाः।।

अर्थ- वैसे तो स्त्री और पुरूष की यह प्रवृत्ति एक जैसी है लेकिन स्त्रियों में दूसरे पुरूषों की तरफ आकर्षित होने की यह प्रवृत्ति ज्यादा होती है।

श्लोक (9)- न स्त्री धर्ममधर्मं चापेक्षते कामयत एव। कार्यपेक्षया तु नाभियुंगेः।।

अर्थ- स्त्री धर्म तथा अधर्म की कोई परवाह नहीं करती वह सिर्फ कामना ही करती है लेकिन मिलने पर अपने अंदर कोई दोष देख लेती है तो फिर नहीं मिलती क्योंकि देखे हुए दोष को देखने का स्त्री का शील होता है।

श्लोक (10)- स्वभावश्च पुरुषेणाबियुज्यमाना चिकीर्षन्त्यपि व्यावर्तते।।

अर्थ- जब कोई पुरूष स्त्री से मिलने की कोशिश करता है तो वह चाहते हुए भी खुद ही पीछे हट जाती है।

श्लोक (11)- पुनःपुनरभियुक्ता सिद्धयति।।

अर्थ- जब पुरूष उस स्त्री से बार-बार मिलने की कोशिश करता है तभी जाकर वह उससे संबंध स्थापित करती है।

श्लोक (12)- पुरूषस्तु धर्मस्थितिमार्यसमयं चापेक्ष्य कामयमानोऽपि व्यावर्तते।।

अर्थ- बहुत से पुरूष ऐसे होते हैं जो पराई स्त्री के साथ संभोग करना तो चाहते है लेकिन समाज आदि के डर के कारण ऐसा नहीं कर पाते।

श्लोक (13)- तथाबुद्धिश्चाभियुज्यमानोऽपि न सिद्धयति।।

अर्थ- ऐसे पुरूष को अगर कोई स्त्री खुद ही संभोग के लिए कहती है तो भी वह उसके साथ ऐसा कुछ नहीं करता।

freehindipdfbooks.com

श्लोक (14)- निष्कारणमभियुंगे। अभियुज्यापि पुनर्नाबियुंगे। सिद्धायां च माध्यस्थ्यं गच्छति।।

अर्थ- स्त्रियां सिर्फ अपने शरीर की आग को मिटाने के लिए ही दूसरे पुरूष के साथ संबंध बनाती है लेकिन पुरूष स्त्री के साथ संभोग करने के बाद फिर से गमगीन हो जाता है।

श्लोक (15)- सुलभामवमन्यते। दुर्लभामाकांगत इति प्रायोवादः।

अर्थ- अगर पुरूष किसी स्त्री को आसानी से पा लेता है तो वह उसको आदर नहीं देता लेकिन अगर कोई स्त्री उसको नहीं मिलती तो वह उसको पाने के लिए कोशिश करता रहता है।

श्लोक (16)- तत्र व्यावर्तनकारणानि।।

अर्थ- व्यावर्तन कारण प्रकरण
निम्नलिखित कारणों से स्त्रियां दूसरे पुरूषों को पाने की इच्छा नहीं करती है

श्लोक (17)- प्रत्यावनुराग।।

अर्थ- अगर कोई स्त्री किसी दूसरे पुरूष को चाहती भी है तो भी उसके पति का प्यार उसको उसके पास जाने से रोक लेता है।

श्लोक (18)- अपत्यापेक्षा।।

अर्थ- दूध पीने वाले बच्चे का प्यार भी उसे रोक देता है।

श्लोक (19)- अतिक्रान्तवयस्त्वम्।।

अर्थ- जब स्त्री जवानी को पार कर लेती है तो वह भी दूसरे पुरूष के पास जाने से रुक जाती है।

श्लोक (20)- दुःखाभिभनः।।

अर्थ- अगर स्त्री दुखी है तो भी वह दूसरे पुरूष के पास नहीं जाती।

श्लोक (21)- विरहानुपलम्यः।।

अर्थ- जिस स्त्री का पति उसे अपने से कभी जुदा नहीं करता वह स्त्री भी दूसरे पुरूष के पास नहीं जाती।

श्लोक (22)- अवज्ञयोपमन्त्रयत इति क्रोधः।।

अर्थ- कहीं अपमान करने के लिए तो नहीं बुलाया है, इस तरह का गुस्सा करके भी दूर हो जाती है।

freehindipdfbooks.com

श्लोक (23)- अप्रतर्क्य इति संकल्पवर्जनम्।।

अर्थ- वह जिस पुरूष के पास जाना चाहती है अगर उसे यह लगता है कि मैं उसे हासिल नहीं कर सकूंगी तो भी वह उस पुरूष के पास जाने का ख्याल छोड़ देती है।

श्लोक (24)- गमिष्यतीत्यनायतिरन्यत्र प्रसक्तमतिरिति च।। मित्रेषु निसृष्टभाव इति तेष्वपेक्षा।।

अर्थ- वह आदमी किसी और स्त्री से प्रेम कर रहा है या किसी और स्त्री के पास जा सकता है। यह सोचकर भी स्त्री उसके पास जाने का ख्याल अपने मन से हटा देती है। उसे लगता है कि वह पुरूष तो अपने दोस्तों की ही बुराई करता है, उनको अपनी सारी बात बता देता है। इसलिए वह उससे दूर जाने में ही अपनी भलाई समझती है।

श्लोक (25)- चण्डवेगः समर्थो वेति भयं मृग्याः।।

अर्थ- मृगी जाति अर्थात छोटी योनि वाली स्त्री पुरूष को ज्यादा उत्तेजक समझकर या उसके लिंग को बहुत ज्यादा समझकर डर के कारण उसके साथ संभोग करने से हट जाती है।

श्लोक (26)- नागरकः कलासु विचक्षण इति क्रीड़ा।।

अर्थ- उसे लगता है वह पुरूष तो संभोग की हर कला में निपुण है। इसी वजह से शर्म के कारण वह उसके साथ संभोग नहीं करती है।

श्लोक (27)- सखित्वेनोपचरित इति च।।

अर्थ- उसको पुरूष और अपनी दोस्ती याद आ जाती है इसलिए वह पीछे हट जाती है।

श्लोक (28)- परिभवस्थानमित्यबहुमानः।।

अर्थ- उस पुरूष को नीची जाति का समझकर वह उससे दूर होना ही सही समझती है।

श्लोक (29)- चशो मन्दवेग इति च हस्तिन्याः।।

अर्थ- हस्तिनी स्त्री अर्थात ज्यादा गहरी योनि वाली स्त्री को जब यह पता चलता है कि इस पुरूष का लिंग छोटा है अर्थात वह शश जाति का है तो वह उसके साथ संभोग करने का इरादा त्याग देती है।

श्लोक (30)- मत्तोऽस्य मा भूदनिष्टमित्यनुकम्पा।।

अर्थ- उसे लगता है कि मेरे इस पुरूष के साथ संबंध बनाने से उस पर कुछ विपत्ति न आ जाए। यही सोचकर वह उस पुरूष से दूर हो जाती है।

freehindipdfbooks.com

श्लोक (31)- विदिता सती स्वजनबहिष्कृता भविष्यामीति भयम्।।

अर्थ- अगर मेरे पति को या मौहल्ले वालों को इस बात का पता चल गया कि मैं किसी दूसरे पुरूष के साथ नाजायज संबंध बना रही हूं तो मैं घर से निकाली जा सकती हूं। इस डर से भी स्त्री दूसरे पुरूष के साथ संबंध बनाने का इरादा त्याग देती है।

श्लोक (32)- पत्या प्रयुक्तः परीक्षत इति विमर्शः।

अर्थ- उसे लगता है कि इस पुरूष को मेरे पति ने ही मेरे बारे में पता करने के लिए नहीं भेजा है।

श्लोक (33)- धर्मापेक्षा चेति।।

अर्थ- उसके मन में धार्मिक भावना आ जाने के कारण भी वह दूसरे पुरूष का ख्याल अपने मन से हटा देती है।

श्लोक (34)- तेषु यदात्मनि लक्षेयेत्तदादित एवं परिच्छिन्द्यात्।।

अर्थ- स्त्री के अपने से दूर जाने के कारणों के अपने अंदर रहते हुए भी उनको हासिल करने के लिए क्या करना चाहिए- यह निम्नलिखित है-

अपनी चालाकी के द्वारा स्त्री पर अपनी कमजोरियों और दोषों को प्रकट नहीं होने देना चाहिए।

श्लोक (35)- आर्यत्वयुक्तानि रागवर्धनात्।।

अर्थ- जिन कारणों से पुरूष को अपने पास आती हुई स्त्री भी नही मिलती। उसे सबसे पहले अपने अंदर के उन कारणों को दूर करना चाहिए।

श्लोक (36)- अशक्तिजान्युपायप्रदर्शनात्।।

अर्थ- पुरूष की जिस असमर्थता के कारण स्त्री उसे न मिल रही हो उसे उसकी असमर्थता को दूर करने का तरीका बता देना चाहिए।

श्लोक (37)- बहुमानकृतान्यतिपरिचयात्।।

अर्थ- ज्यादातर आत्मसम्मान की रुकावट को स्त्री से ज्यादा परिचय बढ़ाकर दूर कर देना चाहिए।

श्लोक (38)- परिभनकृतान्यतिशौण्डीर्याद्वैचक्षण्याश्च।।

अर्थ- परिभव की भावना से पैदा हुई रुकावट को समझदारी से दूर कर देना चाहिए।

freehindipdfbooks.com

श्लोक (39)- तत्परिभवजानि प्रणत्या।।

अर्थ- पुरूष के प्रति स्त्री में जो अविश्वास की भावना है उन्हें अपनी नम्रता दूर कर देना चाहिए।

श्लोक (40)- भवयुक्तान्याश्वासनादिति।।

अर्थ- भययुक्त रुकावटों को आश्वासनों को दूर कर देना चाहिए।

श्लोक (41)- पुरूषास्त्वमी प्रायेण सिद्धाः- कामसूत्रज्ञः कथाख्यानकुशलो बाल्यात्प्रभृति संसृष्टः प्रवृद्धयौवनः क्रीडनकर्मादिनागतविश्वासः प्रेषणस्य कर्तोचितसंभाषणः प्रियस्त कर्तान्यस्य भूतपूर्वो दूतो मर्मज्ञ उत्तमया प्रार्थितः संख्या प्रच्छत्रः संसृष्टः सुभगाभिख्यातः सहसंवद्धः प्रातिवेश्यः कामशीलस्तथाभूतश्च परिचारको मात्रेयिकापरिग्रहो नववरकः प्रेक्षोद्यानत्यागशीलो वृष इति सिद्धप्रतापः साहसिकः शूरो विद्यारूपगुणोपभोगैः पत्युरतिशयिता महार्हवेषोपचारश्चेति।।

अर्थ- पराई स्त्रियों को अपने वश में करने वाले लोग-

कामसूत्र को जानने वाले, कहानी सुनाने में चालाक, अच्छा खासा जवान, बचपन को दोस्त, सही बोलने वाला, खेल-खेलने में विश्वासी, जो स्त्री कहे वही कहे, मनचाही चीजों को लाकर देने वाला, सौभाग्याशाली हो, पहले दूत का काम कर चुका हो, जिसे चाहता हो उससे गुपचुप तरीके से मिल चुका हो, किसी अच्छी स्त्री का प्यार पा चुका हो, स्त्री के साथ उसका पालन-पोषण भी हुआ हो, पड़ोसी, क्रियाशील नौकर, नया दामाद, धाय की पुत्री का पति, नाच, नौटंकी देखने में रुचि रखने वाला, स्त्रियों को उपहार देने वाला, हट्टा-कट्टा, बहादुर, अपनी प्रेमिका के लिए जान की बाजी लगाने वाला, विद्या, गुण, रूप और भोग में स्त्री से बढ़कर हो, जिसका अच्छा वेश हो, संभोग कलाओं में निपुण हो और मर्मज्ञ हो।

श्लोक (42)- यथात्मनः सिद्धतां पश्येदेवं योषियोऽपि।।

अर्थ- जिस प्रकार पुरूष अपने उपायों की कामयाबी के बारे में सोचता है, उसी तरह उसे यह भी सोच लेना चाहिए कि जिस स्त्री को वह चाहता है उसे वह मिल सकेगी भी या नहीं।

श्लोक (43)- अयन्तसाध्या योषितस्तिवमाः- अभियोगमात्रसाध्याः द्वारदेशावस्थानी। प्रासादाद्राजमार्गावलोकिनी। तरुणप्राति वेश्यगृहे गोष्ठीयोजिनी। सततप्रेक्षिणी। प्रेक्षिता पार्श्वविलोकिनी। निष्कारणं सपत्न्याधिवित्रा। भर्तृद्वेषिणी विद्विष्टा च। परिहारहीना। निरपत्या।

अर्थ- अयवसाध्य योषित प्रकरण

हर समय घर के दरवाजे पर खड़ी रहने वाली स्त्री, आसानी से वश में आने वाली स्त्री, छत से सड़क की ओर देखने वाली, आने-जाने वालों को देखने वाली, अपने युवा पड़ोसी के यहां पर जाकर गप्पे

freehindipdfbooks.com

हांकने वाली, किसी के द्वारा देखने पर टेढ़ी नजर से देखने वाली, अपने पति को पसंद न करने वाली, पति से नफरत करने वाली, बच्चा पैदा न करने वाली।

श्लोक (44)- ज्ञातिकुलनित्या। विपत्रापत्या। गोष्ठीयोजिनी। प्रीतियोजिनी। कुशीलवभार्या। मृतपतिका बाला। दरिद्रा बहूपभोगा। ज्येष्ठभार्या बहूदेवरका। बहुमानिनी न्यूनभर्तृका। कौशलाभिमानिनी भर्तुमौर्ख्येणोद्वग्ना। अविशेषतया लोभेन।।

अर्थ- जो स्त्री हर किसी स्त्री के साथ दोस्ती कर लेती हो, जो अपने मायके में ज्यादातर रहती हो, बचपन में विधवा होने वाली, जिसके बच्चे पैदा होकर ही मर जाते हों, नौटंकी, डांस आदि करने वालों की पत्नियां, जिसके बहुत सारे देवर हो, गरीब होते हुए भी जो बड़ी-बड़ी चीजों का शौक रखती हो, जो अपनी खूबसूरती के आगे अपने पति को भी कुछ न समझती हो, जो अपने पर बहुत ज्यादा घमंड करती हो, अपने पति को छोड़कर पराए पुरूष को चाहती हो।

श्लोक (45)- कन्याकाले यत्नेन वारिता कर्थाचिदलब्धाभियुक्ता च सा तदानीम् समानबुद्धिशीलमेधाप्रतिपत्तिसात्म्या। प्रकृत्या पक्षपातिनी। अनपराधे विमानिता। तुल्यरूपाभिश्चाधः कृता। प्रोषितपतिकेति। ईर्ष्यालुपूतिचोक्षल्कीबदीर्घसूत्रकापुरूषकुब्जवाम नविरूपमणिकारग्राम्यदुर्गन्धि-रोगिवृद्धभार्याश्चेति।।

अर्थ- जो स्त्री बुद्धि, विवेक और शील में पुरूष की बराबरी रखती हो, जिसे अपनी पसंद का पति न मिला हो, जो बिना किसी कारण के अपमान सहती हो, जिसका पति उससे कहीं दूर रहता हो, झगड़ालू स्वभाव का हो, नपुंसक हो, डरपोक हो, कद में छोटा हो, बदसूरत हो, दूसरी स्त्रियों की तरफ आकर्षित हो जाता हो, पढ़ा-लिखा न हो, लंबे समय से बीमार हो, ऐसी स्त्रियां दूसरे पुरुषों की तरफ आकर्षित हो जाती हैं।

श्लोक (46)- श्लोकावत्र भवतः- इच्छा स्वभावतो जाता क्रियया परिवृंहिता। वुद्धया संशोधितोद्वेगा स्थिरा स्यादनपायिनी।

अर्थ- इस विषय के अंदर 2 बहुत ही पुराने और मशहूर श्लोक हैं- यह बात तो स्वाभाविक ही है कि किसी भी सुन्दर स्त्री को पुरूष चाहता है और किसी भी खूबसूरत पुरूष को स्त्री चाहती है। ऐसी इच्छाएं परिचय और उपायों द्वारा बढ़ाई जा सकती हैं और बुद्धि से उद्वेगों का संशोधन करके इस तरह की ख्वाहिश स्थायी बनाई जा सकती है।

श्लोक (47)- सिद्धतामात्मनो ज्ञात्वा लिंगान्युत्रीय योषिताम्। व्यावृत्तिकारणोच्छेदी नरोयोषित्सु सिध्यति।।

अर्थ- खुद को मिलने वाली सफलताओं को समझकर स्त्री के हाव-भाव, कटाक्ष का अंदाजा करके मुश्किलों को दूर करने का उपाय करके पुरूष दूसरी स्त्रियों से संभोग करने में सफल हो सकता है।

पराई स्त्रियों से साथ किस तरह जान-पहचान बनाई जा सकती है उसके बारे में इस अधिकरण

freehindipdfbooks.com

में बताया गया है लेकिन पहले अध्याय में पहले स्त्री और पुरूष के शील-स्वभाव की व्यवस्था बताई गई है। फिर उन कारणों के बारे में पता किया जाए जिनसे चाहने वाली स्त्री भी पुरूष से दूर रहती है। इसके बाद यह बताया जा रहा है कि ऐसी कौन सी स्त्री है जो बिना किसी कोशिश के पराए पुरूष से सहवास कराने के लिए तैयार हो जाती है।

इस प्रसंग में वात्स्यायन ने संभोग की 10 दशाएं बताई हैं। यह 10 दशाएं जुदाई के समय होती हैं। यह जरूरी नहीं है कि काम की ये 10 दशाएं सिर्फ पराई स्त्री से लेकर ही प्रवृत्त हुआ करती हैं। जहां कहीं भी इच्छा होती है वहीं संभोग की 10 दशाएं भी उत्पन्न हो जाती हैं।

आचार्य वात्स्यायन द्वारा बताई गई असली बात यही है कि युवक, युवती, अपना, पराया कोई भी हो, मनचाही चीज के न मिलने पर कामसूत्र का यह अधिकरण सर्व-साधारण दशाओं में लेकर प्रवृत्त हुआ है। इस अधिकरण का मकसद सिर्फ पराई स्त्री ही नहीं है लेकिन चाहत की सर्वसाधारण चीजों को समझना चाहिए।

आचार्य वात्स्यायन ने संभोग की जिन 10 दशाओं के बारे में बताया है वह सिर्फ पुरुषों को ही नहीं परेशान करती बल्कि स्त्रियों को भी परेशान करती हैं क्योंकि जिस तरह से पुरूष दूसरी स्त्रियों के साथ संबंध बनाने के लिए उत्सुक रहते हैं उसी तरह स्त्रियां भी दूसरे पुरुषों के साथ संबंध बनाने की इच्छा रखती हैं।

इति श्रीवात्स्यायनीये कामसूत्रे पारदारिके पश्चमेऽधिकरणे स्त्री-पुरूषशीलावस्थापनं व्यावर्त्तनकारणानि स्त्रीषु सिद्धाः पुरूषा अयत्नसाध्या योषितः प्रथमोऽध्यायः।।

भाग 5 पारदारिक

freehindipdfbooks.com

अध्याय 2 परिचयकारण प्रकरण

श्लोक (1)- यथा कन्या स्वयमभियोगसाध्या न तथा दूत्या। परस्त्रियस्तु सूक्ष्मभावा दूतीसाध्या न तथात्मनेतयाचार्याः।

अर्थ- कामशास्त्र के पुराने आचार्यों के मुताबिक जिस तरह से कुंवारी युवती को अपने उपायों आदि से पाया जा सकता है उसी तरह पराई स्त्रियों को बिना दूती की सहायता से स्वयं पाना मुमकिन नहीं है।

श्लोक (2)- सर्वत्र शक्तिविषये स्वयं साधनमुपपत्रतरकं दुरुपपादत्वात्तस्य दूतीप्रयोग इति वात्स्यायनः।।

अर्थ- आचार्य वात्स्यायन के मुताबिक स्वयं अपने बल पर स्त्री को पाना दूती की मदद लेने से ज्यादा अच्छा है। अगर स्वयं की कोशिश कामयाब नहीं हो पाती तो दूती की मदद ली जा सकती है।

श्लोक (3)- प्रथमसाहसा अनियन्त्रणसंभाषाश्च स्वयं प्रतार्याः। तद्विपरीताश्च दूत्येति प्रायोवादः।।

अर्थ- जिस स्त्री का चरित्र पहली बार खराब हुआ हो उसे पाने में पुरूष ही समर्थ होता है दूती नहीं। कभी हासिल करने वाली स्त्री से बात न हुई हो, उससे मिलना किसी भी तरह से पुरूष के वश में न हो तो फिर दूती का ही सहारा लेना पड़ता है।

श्लोक (4)- स्वयमभियोक्ष्यमाणस्त्वादावेव परिचयं कुर्यात्।।

अर्थ- अगर पुरूष खुद स्त्री को पाने के उपाय करना चाहता है तो उसे पहले उससे मेलजोल और दोस्ती आदि बढ़ाना चाहिए।

श्लोक (5)- तस्याः स्वाभाविकं दर्शनं प्रायत्निकं च।।

अर्थ- अगर बिना किसी कोशिश के स्त्री को देखा जाए तो उसे स्वभाविक कहते हैं और अगर उसे किसी उपाय आदि से देखा जाए तो उसे प्रायत्निक कहते हैं।

श्लोक (6)- स्वाबाविकमात्मनो भवनसंनिकर्षे प्रायत्निकं मित्रज्ञातिमहामात्रवैद्यभवनसंनिकर्षे विवाहयज्ञोत्सवव्यसनोद्यानगमनादिषु।।

अर्थ- स्त्री को अपने घर के पास आते-जाते देखना और स्वाभाविक और दोस्त, मंत्री या डाक्टर के घर के पास या विवाह, यज्ञ, उत्सव, विपत्ति, के मौके पर देखना प्रायत्निक दर्शन है।

श्लोक (7)- दर्शने चास्याः सततं साकारं प्रेक्षणं केशसंयमनं नखाच्छुरमणमाभरणप्रह्लादनमधरौष्ठविमर्दनं तास्ताश्च लीला वयस्यैः सह प्रेक्षमाणायास्तत्संबद्धाः परापदेशिन्यश्च कथास्त्यागोपभोगप्रकाशनं सख्युरुत्संगनिषण्णस्य सागंभंगजुम्भणमेकभ्रूक्षेपणं मन्दवाक्यता तद्वाक्यश्रवणं तामुद्दिश्य

बालेनान्यजनेन वा सहान्योपदिष्टा द्वयर्था कथा तस्यां स्वयं मनोरथावेदनमन्यापदेशेन तामेवोद्दिश्य बालचुम्बनमालिंगनंचजिह्वया चास्य ताम्बूदानं प्रदेशिन्या हनुदेशगट्टनं तत्तद्यथायोगं यथावकाशं च प्रयोक्तव्यम्।।

अर्थ- स्त्री का भावदर्शन इस तरह करना चाहिए- जब वह अपने बालों को खोलकर सुखा रही हो, नाखूनों से खुजला रही हो, अपने गहनों को ठीक कर रही हो, अपने नीचे वाले होंठों को चबा रही हो, तब अपने दोस्तों के साथ स्त्री के उन भावों की नकल करने का नाटक करना चाहिए। दूसरे लोगों के बहाने उसकी बातें करनी चाहिए, अपने त्याग तथा भोग-विलासों के बारे में बातें करनी चाहिए, दोस्त की गोद में लेटकर अंगड़ाई लेनी चाहिए, जम्भाई लेते हुए उसकी तरफ भौंहों को मटकाना चाहिए, धीरे से बोलना चाहिए तथा उसकी बातें सुनना चाहिए।

श्लोक (8)- तस्याश्चागंतस्य बालस्य लालनं बालक्रीडनकानां चास्य दानं ग्रहणं तेन सनिकृष्टत्वात्कथायोजनं तत्संभाषणक्षमेण जनेन च प्रीतिमासाद्य कार्यं तदनुबन्धं च गमनागमनस्य योजनं संश्रये चास्यास्तामपश्यतो नाम कामसूत्रसंकथा।।

अर्थ- स्त्री के गोद में लिए हुए बच्चे को प्यार करना चाहिए तथा उसे खेलने के लिए खिलौने देने चाहिए। उसके पास जाकर उससे बात करनी चाहिए। जो आदमी उससे बात करता हो उससे दोस्ती कर लेनी चाहिए तथा उसके द्वारा अपना मकसद हल कर लेना चाहिए। किसी भी काम के बहाने उसके घर पर आना-जाना शुरू कर देना चाहिए। उसको ऐसे स्थान पर कामसूत्र के बारे में बातें करनी चाहिए कि जहां से स्त्री उसकी बातों को सुन तो सके लेकिन यह न जान सके कि वह उसको देखकर ऐसी बाते बोल रहा है।

श्लोक (9)- प्रसृते तु परिचये तस्या हस्ते न्यासं रिक्षेपं च निदध्यात्। तत्प्रतिदिनं प्रतिक्षणं चैकदेशतो गृह्णीयात्। सौगन्धिक पूलफलानि च।।

अर्थ- उससे अच्छी तरह से जान-पहचान होने के बाद उसे ऐसी चीजें देनी चाहिए जो उसके पास कुछ दिन तक रखी रहें। इसके बाद उससे वह चीज लेकर उसको दुबारा ऐसी चीजें रखने के लिए दें जो कि उसके पास ज्यादा दिनों तक रखी रहे। उससे प्यार, भरोसा और जान-पहचान बढ़ाने के लिए रोजाना सामान को लेने-देने का क्रम जारी रखें जैसे इत्र, सुपारी, बाल बनाने के लिए कंघा आदि। ऐसी चीजों को उपयोग करने के लिए रोजाना मांगा जा सकता है।

श्लोक (10)- तामात्मनो दारैः सह विस्त्रम्भगोष्ठयां विविक्तासने च योजयेत्।।

अर्थ- उसे अपने घर की स्त्रियों के साथ बातचीत या भोजन आदि करने में लगा देना चाहिए।

श्लोक (11)- नित्यदर्शनार्थ विश्वासनार्थ च।।

freehindipdfbooks.com

अर्थ- इस प्रकार की कोशिशों को करते रहना चाहिए जिससे वह रोजाना दिखती रहे और उसका प्रेम और भरोसा भी बढ़ते जाए।

श्लोक (12)- सुवर्णकारमणिकारवैकटिकनीलीकुसुम्भरञ्जकादिषु च कामार्थिन्यां सहात्मनो वश्यैश्चैषां तत्सम्पादने स्वयं प्रयतेत।।

अर्थ- सुनार, जड़िया, न्यारिया, नीलगर, रंगरेज, बढ़ई आदि से अगर स्त्री कोई काम कराने जाती है तो पुरूष को उससे कहकर कि मै आपका यह काम करवा दूंगा कहकर उसे घर पर भेज देना चाहिए।

श्लोक (13)- तदनुष्ठाननिरतस्य लोकविदितो दीर्घकालं संदर्शनयोगः।।

अर्थ- इस तरह से स्त्री का काम करते हुए पुरूष को लोग-बाग बहुत ही देर से समझ पाते हैं।

श्लोक (14)- तस्मिश्चान्येषामपि कर्मणामनुसन्धानम्।।

अर्थ- एक काम को समाप्त किए बिना ही पुरूष को दूसरा काम शुरु कर देना चाहिए।

श्लोक (15)- येनकर्मणा द्रव्येण कौशलेन चार्थिनी स्यात्तस्य प्रयोगमुत्पत्तिमागममुपायं विज्ञानं चात्मायत्तं दर्शयेत्।।

अर्थ- स्त्री को जिन-जिन कामों की जरूरत हो, जिन चीजों को वह पसंद करती हो, जिस काम आदि को वह सीखना चाहती हो, उनको पूरा करने, जानने तथा जानकारी रखने और कोशिश करने की अपनी योग्यता उससे जाहिर कर देना चाहिए।

श्लोक (16)- पूर्वप्रवृत्तेषु लोकचरितेषु द्रव्यगुणपरीक्षासु च तया तत्परिजनेन च सह विवादः।।

अर्थ- पुराने रीति-रिवाजों, वस्तुओं के गुणों की पहचान में उससे और उसके नौकरों से बहस करने से संकोच दूर होता है।

श्लोक (17)- कृतपरिचयां दर्शितेगिंताकारां कन्यामिवोपायतोऽभियुञ्जीतेति। प्रायेण तत्र सूक्ष्मा अभियोगाः। कन्यानामसंप्रयुक्तत्वात्। इतरासु तानेव स्फुटमुपदध्यात्। संप्रयुक्तत्वात्।।

अर्थ- अभियोग प्रकरण-

जिस स्त्री से जान-पहचान कर ली हो, जिसने संकेत तथा हाव-भाव दिखा दिए हो उसको उसी तरह से अपनाना चाहिए जैसा कि कन्या को पाने के अध्याय में बताया गया था।

श्लोक (18)- तया तु विवदमानो +अत्यन्ताद् भुतम् इति ब्रूयाद् इति परिचयकारणानि//

श्लोक (19)- संदर्शिताकारायां निर्भिन्नसद्भावायां समुपभोगव्यतिकरे तदीयान्युपयुञ्जीत।।

freehindipdfbooks.com

अर्थ- जिस स्त्री ने अपने शरीर के अंगों को दिखा दिया हो, जिसने सदभाव जाहिर कर लिया हो, उसकी चीजों को उसके प्रेमी को भोगना चाहिए तथा प्रेमी की चीजों को स्त्री को उपभोग करना चाहिए।

श्लोक (20)- तत्र महार्हगंधमुत्तरीयं कुसुमं स्यादंगलीयकं च। तद्धस्ताद-गृहीतताम्बूलया गोष्ठीगमनोद्यतस्य केशहस्तपुष्पयाचनम्।।

अर्थ- एक-दूसरे को चीजे लेने-देने की शुरुआत होने पर अगर स्त्री पुरूष को ज्यादा सुगंधित चीजें, अंगूठी, दुपट्टा और फूल देती है तथा जब वह अपने हाथ में रखा हुआ पान खा ले तो घूमने जाने की तैयारी करते समय उसके जूड़े में लगे हुए सुगंधित फूल मांगे।

श्लोक (21)- तत्र महार्हगंध स्पृणीयं स्वनखदशनपदचिह्नितं साकारं दद्यात्।।

अर्थ- इसके बदले में स्त्री अगर कोई सुगंधित या मनचाही चीज पुरूष को देती है तो उसे नाखून से उस पर निशान बना देना चाहिए।

श्लोक (22)- क्रमेण च विविक्तदेशे गमनमालिंगनं चुंबन ताम्बूलस्य ग्राहणं दानान्ते द्रव्याणां परिवर्तनं गुह्यदेशाभिमर्शनं चेत्यभियोगाः।।

अर्थ- पुरूष और स्त्री को धीरे-धीरे एकांत में मिलना-जुलना चाहिए, आलिंगन और चुंबन आदि करना चाहिए, उसके गुप्त अंगों को छूना चाहिए। इसी को अभियोग कहते हैं।

श्लोक (23)- यत्र चैकाभियुक्ता न तत्रापरामभियुञ्जीत।।

अर्थ- जहां पहले किसी और स्त्री से मिल चुके हो वहाँ उस स्त्री को मिलने के लिए नहीं बुलाना चाहिए।

श्लोक (24)- श्लोवत्र भवतः- अन्यत्र दृष्टसंचारस्तद्धर्ता यत्र नायकः। न तत्र योषितं कांचित्सुप्रापामणि लंगयेत्।।

अर्थ- इस विषय के बारे में 2 पुराने श्लोक हैं- जिस घर में स्त्री के पति को उसके नाजायज संबंधों के बारे में पता हो, वहां पर आसानी से मिलने वाली स्त्री से मिलना भी ठीक नहीं है।

श्लोक (25)- शंगितां रक्षितां भीतां सश्वश्रूकां च योषितम्। न तर्कयेत मेधावी जानन्प्रययमात्मनः।।

अर्थ- मजबूत दिल वाली, डरपोक, भरे-पूरे घर वाली स्त्रियों को आत्मविश्वास लोगों को भूलकर भी नहीं पटाना चाहिए।

जिन स्त्रियों से संभोग क्रिया करने की इच्छा करती है वह 2 प्रकार की होती है एक तो वह कन्या जिसने पहले कभी किसी पुरूष के साथ संबंध बनाए हो। उसको पाने के लिए पुरूष को दूती की

freehindipdfbooks.com

मदद न लेकर स्वयं ही अपने उपायों को आजमाना चाहिए। ऐसा इसलिए कि उस लड़की को कोई तजुर्बा नहीं होता। उसको आसानी से अपने जाल में फंसाया जा सकता है। लेकिन जिन युवतियों को अनुभव होता है उनको दूती के जरिये से अपनी ओर आकर्षित किया जा सकता है। वह सब इशारों को आसानी से समझ जाती है।

स्त्री को आकर्षित करने के लिए सबसे पहले उससे जान-पहचान और प्यार-मोहब्बत बढ़ाना चाहिए। उसको देखने और अपने आपको दिखाने की कोशिश करनी चाहिए। स्त्री को इधर-उधर जाते हुए देखना स्वाभाविक दर्शन है। जिस स्त्री से मिलने की ख्वाहिश हो, उसके हाव-भाव, अंग संचालन को देखकर अनुकरण करना चाहिए, उसको लक्ष्य मानकर किसी बच्चे को चूमना, आलिंगन करना आदि बाध्य परिचय कहे जाते हैं। इस तरह के बाध्य परिचय द्वारा धीरे-धीरे बाते करना अथवा सिलसिला जोड़ना चाहिए।

जब स्त्री से बाहरी परिचय हो जाता है तो उससे मिलने-जुलने के मौके ढूंढने चाहिए, उसके घर आने-जाने का सिलसिला चालू करना चाहिए, उसके बाद पान, सुपारी, इत्र जैसी चीजों के उसे रखने के लिए देना चाहिए क्योंकि इन चीजों का रोजाना लेन-देन चलता रहना चाहिए। इससे दोनों को एक-दूसरे से रोजाना मिलने का मौका मिलता रहता है।

आचार्य वात्स्यायन ने दूसरी स्त्रियों को पाने के लिए संकेतों और इशारों को बढ़ावा दिया है। काम-शास्त्रियों ने इस संबंध के संकेत शब्द भी बनाएं है जैसे पुरूष का नाम न लेकर उसे किसी फल या स्त्री को किसी फूल के नाम से बुलाना। जैसे अगर वह ब्राह्मण जाति का है तो दाड़िम, क्षत्रिय है तो कटहल, वैश्य है तो केला, शुद्र है तो आम। ब्राह्मण स्त्री के लिए कुन्दपुष्प, राजकुमारी हो तो मालती, वैश्य हो तो मल्लिका, शुद्र कन्या हो तो कुमुदिनी, व्यापारी की लड़की हो तो सरोज और मंत्री की लड़की हो तो उसे उत्पल कहकर पुकारना चाहिए।

इन्हें भाषा संकेत कहते हैं। इन संकेतों का प्रयोग अपने मकसद को छिपाने तथा स्त्री पर प्रकट करने के लिए उस समय करना चाहिए जब कई लोग हो। चिट्ठी लिखने में भी इन भाषा संकेतों का प्रयोग करना चाहिए।

भाषा संकेतों के अलावा अंग संकेत, पुष्प माला संकेत, ताम्बुल संकेत, वस्त्र संकेत तथा पोटली संकेत जैसे 5 और भी संकेत बताए गए हैं।

अंग सकेत- अगर स्त्री और पुरूष को एक-दूसरे के हाल-चाल पूछने हो तो कान को छूना चाहिए। अपने प्यार को जाहिर करने के लिए उसके बालों में उंगली घुमानी चाहिए। प्रेमी की बेचैनी बताने के लिए छाती पर हाथ रखना चाहिए। सम्मान प्रकट करने के लिए माथे पर हाथ रखना चाहिए। मिलने के लिए अपने हाथ की मध्यमा उंगली को तर्जनी उंगली पर चढ़ा देना चाहिए। यदि बुलाना हो तो मुट्ठी बांधकर हाथों को जोड़ना चाहिए।

किसी रोज के लिए हां करने के लिए तारीखों का संकेत करना चाहिए। कनिष्का उंगली (हाथ की सबसे छोटी उंगली) के पहले पोर से लेकर अंगूठे के आखिरी पोर तक 15 पोर होते हैं। प्रतिपदा

freehindipdfbooks.com

(अमावस) से लेकर पूर्णमासी तक इनको 15 दिन माना जाता है। यह तारीख संकेत होते हैं। जब किसी तारीख को संकेत के जरिये बताना हो तो उसके लिए उंगलियों के पोरों की मदद लेनी चाहिए। दिशाओं का संकेत भी उंगलियों से किया जाता है। अंगूठा दिखाने से पहले दिशा का तर्जनी उंगली से दक्षिण, मध्यमा से पश्चिम, कनिष्का तथा उसके पास की उंगली से उत्तर दिशा का बोध होता है। शुक्लपक्ष (पूर्णिमा) तथा कृष्णपक्ष (अमावस) का संकेत हाथों से करना चाहिए। बाएं हाथ को दिखाने से शुक्लपक्ष (पूर्णिमा) तथा दाएं हाथ को दिखाने से कृष्णपक्ष (अमावस्या) होता है।

इन अंग संकेतों को तब किया जाता है जब पुरूष स्त्री के पीछे पागल होकर उसकी गली के चक्कर काटता रहता है और स्त्री खिड़की से संकेत करती है।

पुष्पमाला संकेत- अनुराग प्रकट करने के लिए लाल रंग के फूलों की माला, स्त्री से वैराग्य प्रकट करने के लिए गेरुए रंग के फूलों की माला, प्यार न मिलने पर काले धागे में पिरोए हुए फूलों की माला का आचरण करना। जब पुरूष इस तरह की माला को गले में डालकर स्त्री के सामने से निकलता है तो माला के संकेत से स्त्री पुरूष के मनोभावों को समझ जाती है। माला को खुद पहनने के अलावा अपने मन के भावों को प्रकट करने के लिए दूतियों द्वारा स्त्री और पुरूष एक-दूसरे के पास फूल या फूलों की माला भेजते हैं।

स्त्री और पुरूष के बीच जो एक-दूसरे को पान देने का आदान-प्रदान होता है उस बीड़े के 5 प्रकार होते हैं। पान की नसें निकालकर जो बीड़ा तैयार होता है उसे कौशल कहा जाता है। अंकुश के आकार के बीड़े को कंदर्प, चौरस बीड़े को पर्यक तथा चौकोर बीड़े को चतुरत्न कहते हैं।

प्यार को जाहिर करने के लिए कौशल पान, आपस में दोस्ती प्रकट करने के लिए अंकुश, कामपीड़ा प्रकट करने के लिए कंदर्प तथा संभोग करने के लिए पर्यक पान का बीड़ा दिया जाता है।

अभी मौका नहीं है का इशारा चौकोना का पान बीड़ा, मनोमालिन्य प्रकट करने के लिए बिना सुपारी का पान तथा प्यार को प्रकट करने के लिए सुपारी और इलायची मिलाकर पान देते हैं। रिश्ता तोड़ने के लिए पान को तोड़कर काले धागे में बांधा जाता है। संयोग का भाव प्रकट करने के लिए 2 पानों की नोकों को जोड़कर लाल धागे में बांध दिया जाता है। बहुत ज्यादा प्यार प्रकट करने के लिए पान के टुकड़ों को जोड़कर दिया जाता है, उसके अंदर केसर डाली जाती है और बाहर चंदन का लेप किया जाता है।

वस्त्र संकेत- जब पुरूष अपनी कामपीड़ित स्थिति स्त्री को बताना चाहता है तो इसके लिए कपड़ों में छेद करके संकेत दिया जाता है। लाल रंग के कपड़े अनुराग का संकेत और गेरुए रंग के कपड़े द्वारा वैराग्य का संकेत करना चाहिए। बिछुडने की हालत का संकेत फटे कपड़े पहनकर, मिलन का संकेत कपड़े में गांठ बांधकर अपने मन के भाव प्रकट करने चाहिए।

वस्त्र संकेत को उस समय किया जाता है जब स्त्री और पुरूष अपने घर की छत पर खड़े होकर एक-दूसरे से मिलने के लिए बेचैन रहते हैं।

पोटली संकेत- अपने प्यार को जाहिर करने के लिए खुशबू वाली चीजें सुपारी, मेवा आदि की

freehindipdfbooks.com

पोटली बांधकर दी जाती है। सुहागरात के दिन आज भी यह प्रथा प्रचलित है। ज्यादा प्यार को प्रकट करने के लिए छोटी इलायची, जावित्री और लौंग की पोटली बनाई जाती है, प्रेम के भंग हो जाने पर मूंगों की पोटली बनाई जाती है, बहुत ज्यादा पुरानी दोस्ती को जाहिर करने के लिए 2 मूंगों को पोटली में बांधा जाता है। जब काम-ज्वर की पीड़ा प्रकट करनी हो तो कडवी चीजों की पोटली बनाई जाती है।

संभोग क्रिया करने का संकेत देने के लिए मुनक्का की पोटली तैयार की जाती है। अपने शरीर को समर्पित करने के भाव में कपास की पोटली, जान लुटाने के लिए जीरे की पोटली, डर दिखाने के लिए भिलावा की पोटली, डर दूर होने की खबर देने के लिए हर्रे की पोटली का संकेत करना चाहिए।

पोटली संकेत के लिए मोम की टिकिया बनाकर उसके ऊपर अपने हाथ की पांचों उंगलियों के नाखूनों से निशान बनाकर लाल धागे से बांध देने को पोटली कहा जाता है।

freehindipdfbooks.com

अध्याय 3 भावपरीक्षा प्रकरण

श्लोक (1)- अभियुञ्जानो योषीतः प्रवृत्तिं परीक्षेत। तया भावः परीक्षतो भवति अभियोगांश्च प्रतिगृह्णीयात्।।

अर्थ- पुरूष जब किसी स्त्री से मिलता-जुलता है तो उसे स्त्री के स्वभाव की और उसके भावों की जानकारी ले लेनी चाहिए क्योंकि भाव ही चेष्टा का काम है।

श्लोक (2)- मन्त्रमवृण्वानां दृत्यैनां साधयेत्।।

अर्थ- स्त्री और पुरूष के बीच की सलाह न प्रकट करने वाली चालाक दूती को साधना चाहिए।

श्लोक (3)- अप्रतिगृह्याभियोगं पुनरपि संसृज्यमानां द्विधाभूतमानसां विद्यात्। तां क्रमेण साधयेत्।।

अर्थ- जो स्त्री पुरूष के साथ बिना मन के संभोग करती है तो उसे मुश्किल में फंसा हुआ समझना चाहिए और उसको धीरे-धीरे इस मुश्किल से बाहर निकालना चाहिए।

श्लोक (4)- अप्रतिगृह्याभियोगं सविशेषमलंकृता च पुनर्दृश्येत तथैव तमभिगच्छेश्च विविक्ते बलादग्रहणीयां विद्यात्।।

अर्थ- जो स्त्री पुरूष से नहीं मिलती लेकिन फिर भी पहले से ज्यादा सजती-संवरती है तो पुरूष को उसे उसी तरह से मिलाने की कोशिश करनी चाहिए। पुरूष को उसके इस भाव को जान लेना चाहिए कि उस स्त्री में जबरदस्ती संभोग कराने की प्रवृत्ति है।

श्लोक (5)- बहूनपि विषहतेऽभियोगात्र च चिरेणापि प्रयच्छत्यात्मानं सा शुष्कप्रतिग्राहिणी परिमयविघटनसाध्या।।

अर्थ- जो स्त्री पुरूष से कई बार मिल चुकी हो लेकिन फिर भी संभोग क्रिया करने से मना करती हो पुरूष को उसे नीरस मिलन वाली स्त्री समझना चाहिए। उस स्त्री से संभोग करने के लिए मेलजोल बढ़ाना चाहिए।

श्लोक (6)- मनुष्यजातेश्चित्तानित्यत्वात्।।

अर्थ- पुरूष के मन की वृत्तियां बदलती रहती हैं इसलिए एक बार परिचय टूट जाने पर फिर दुबारा से जोड़ा जा सकता है।

श्लोक (7)- अभियुक्तापि परिहरति, न च संसृज्यते। न च प्रत्याचष्टे। तस्मित्रात्मनि च गौरवाभिमानात्। सातिपरिचयात्कृच्छ्रसाध्या। मर्मज्ञया दूत्या तां साधयेत्।।

अर्थ- बहुत सी स्त्रियों की आदत होती है कि वह पुरूष से कई बार मिलने के बाद अचानक मिलना छोड़ देती हैं। वह न तो पुरूष से संभोग कराती हैं और न ही उसे मना ही करती हैं। वह ऐसा करती हैं तो समझती है कि मैने कितना बड़ा काम किया है। ऐसी स्त्री को या तो ज्यादा मेलजोल के जरिये संभोग करने के लिए तैयार करना चाहिए या फिर चालाक दूती से साधना पड़ता है।

श्लोक (8)- सा चेदभियुज्यमाना पारुष्येण प्रत्यादिशत्युपेक्ष्या।।

अर्थ- जो स्त्री पुरूष से मिलने पर उसे नजरअंदाज करती है या किसी भी बात के पूछने पर उसका सही तरह से जवाब नहीं देती है तो पुरूष को ऐसी स्त्री से मिलना छोड़ देना चाहिए।

श्लोक (9)- परुषयित्वापि तु प्रीतियोजिनीं साधयेत्।।

अर्थ- कुछ स्त्रियां अपनी आदतानुसार पहले गुस्से में बात करती हैं लेकिन बाद में प्यार भी बहुत करती हैं। पुरूष को ऐसी स्त्रियों से संभोग करने के लिए कोशिश करते रहना चाहिए।

श्लोक (10)- कारणात्संस्पर्शनं सहते नाववुध्यते नाम द्विधाभूतमानसा सातत्येन क्षान्तया वा साध्या।।

अर्थ- यदि स्त्री के साथ पुरूष प्राक-क्रीड़ा जैसे आलिंगन या चुंबन आदि करता है लेकिन स्त्री उसके साथ ऐसा बर्ताव करती है जैसे कि वह कोई अंजान व्यक्ति है तो पुरूष को उसे मुश्किल में समझकर सब्र रखकर उसके संभोग करने की प्रतीक्षा करनी चाहिए।

श्लोक (11)- समीपे शयानायाः सुप्तो नाम करमुपरि विन्यसेत्। सापि सुप्तेवोपेक्षेते। जागृती त्वपनुदेद्वयोऽभियोगाकांक्षिणी।।

अर्थ- पुरूष को अपने पास लेटी हुई स्त्री के ऊपर हाथ रख देना चाहिए अगर वह संभोग करने की इच्छा रखती होगी तो वह पुरूष के हाथों को तुरंत ही हटा देती है नहीं तो वह ऐसी पड़ी रहेगी जैसी कि कुछ पता ही न हो।

श्लोक (12)- एतेन पादस्योपरि, पादन्यासो व्याख्यातः।।

अर्थ- सोती हुई स्त्री के ऊपर हाथ रखने के बाद पैर को भी रख देना चाहिए।

श्लोक (13)- तस्मिन्प्रसृते भूयः सुप्तसंश्लेषणमुपक्रमेत्।।

अर्थ- इसके बाद पुरूष को धीरे-धीरे लेटे-लेटे ही हाथ-पैर रखने के बाद स्त्री के साथ आलिंगन भी करना शुरू कर देना चाहिए।

freehindipdfbooks.com

श्लोक (14)- तदसहमानामुत्थितां द्वितीयेऽहनि प्रकृतिवर्तिनीमभियोगार्थिनीं विद्यात्। अदृश्यमानां तु दूतीसाध्याम्।।

अर्थ- यदि स्त्री पुरूष के द्वारा आलिंगन करते ही तुरंत खड़ी हो जाती है तथा दूसरे दिन नाराज सी न लगे तो पुरूष को समझ लेना चाहिए कि वह अब मिलना पसंद करती है। इसलिए पुरूष को उससे मिलते रहना चाहिए। अगर स्त्री संभोग से दूर भागती है तो दूती के द्वारा उसे साधना चाहिए।

श्लोक (15)- चिरमदृष्टापि प्रकृतिस्थैन संसृज्यते कृतलक्षणां तां दर्शिताकारामुपक्रमेत्।।

अर्थ- अगर बहुत दिनों के बाद मिलने भी स्त्री दुबारा मिलना चाहती हो, इशारे करती हो, हावभाव प्रकट करती हो तो ऐसी स्त्री से दुबारा मिलना-जुलना शुरू कर देना चाहिए।

श्लोक (16)- अनभियुक्ताप्याकारयति। विविक्ते चात्मानं दर्शयति। सवेपथुगद्गदं वदति। स्विन्नकरचरणाङलिः स्विन्नमुखी च भवति। शिरः पीडने संवाहने चोर्वोरात्मानं नायके नियोजयति।।

अर्थ- जो स्त्री बिना मिले हुए ही अपने हाव-भाव दिखाती हो, एकांत में अपने शरीर के अंगों को दिखाती हो, बोलते समय जिसकी आवाज में कंपकंपी प्रतीत हो, जिसकी बोली मीठी हो, चेहरा पसीने से भीग जाता हो, पुरूष के हाथ-पैर और सिर को दबाने लगे तो पुरूष को समझ जाना चाहिए कि वह उससे प्रेम करती है।

श्लोक (17)- आतुरासंवाहिका चैकेन हस्तेन संवाहयन्तीद्वितीयेन बाहुना स्पर्शमावेदयति श्लेषपति च। विस्मतभावा।।

अर्थ- जिस समय स्त्री के अंदर काम-उत्तेजना पैदा होती है तो उस समय वह अपने पैर को दबाने लगती है, दूसरे हाथ से पुरूष को अपने शरीर को छूने का इशारा करती है तथा पुरूष के स्पर्श के बिना ही आर्श्चचकित होती हुई दूसरे हाथ से भी पैर को दबाने लगती है।

श्लोक (18)- निद्रान्धा वा परिस्पृश्योरुभ्यां बाहुभ्यामपि तिष्ठति। अलकैकदेशमूर्वेरुपरि पातयति। ऊरुमूलसंवाहने नियुक्ता न प्रतिलोमयति। तत्रैव हस्तमेकमविचलं व्यस्पति। अंगसंदंशेन च पीड़ितं चिरादपन-यति।।

अर्थ- स्त्री नींद आने का बहाना करके दोनों हाथों से पुरूष का स्पर्श करके दोनों घुटनों के बल बैठती है और माथे को घुटनों पर रखती है। पुरूष के पैर को दबाती हुई अपने हाथों को पुरूष की जांघों की ओर बढ़ाती है, नीचे की तरफ लेकर नहीं आती तथा एक हाथ को उसकी जांघ के जोड़ में रखे रहती है। जिस समय पुरूष अपनी जांघों पर रखे हुए उसके हाथ को जोर से दबाती है तभी वह अपने हाथ को हटाती है।

श्लोक (19)- प्रतिगृह्यौवं नायकाभियोगान्पुनर्द्वितीयेऽहनि संवाहनायोपगच्छति।।

freehindipdfbooks.com

अर्थ- इस तरह पहले दिन वह स्त्री पुरूष से मिलकर दूसरे दिन फिर से उसका पैर दबाने के लिए आ जाती है।

श्लोक (20)- नात्यर्थ संसृज्यते। न च परिहरित।।

अर्थ- स्त्री के बहुत ज्यादा संजीदा होने की वजह से वह अपने भावों को छुपाकर ही अपनी प्रवृत्ति को दिखाती है। वह न तो स्वयं ही ज्यादा सम्पर्क स्थापित करती है और न ही पुरूष का ध्यान करती है।

श्लोक (21)- विविक्ते भावं दर्शयति निष्कारणं चागूढमन्यत्र प्रच्छन्नप्रदेशात्।।

अर्थ- स्त्री यह समझती है कि दूसरा कोई व्यक्ति देख तो रहा ही नहीं है इसलिए वह एकांत में अपने भावों को प्रदर्शन करती है तथा बाकी सारी जगह प्रच्छन्न भाव प्रकट करती है।

श्लोक (22)- संनिकृष्टपरिचारकोपभोग्या सा चेदाकारितापि तथैव स्यात् सा मर्मज्ञया प्रस्या साध्वा।।

अर्थ- जो स्त्री पुरूष के पास रहकर, सेवा करके भोग करने लायक हो उसको अगर इशारे भी किये जाए वह फिर भी वैसी ही रहेगी। उसे दूती की मदद से ही साधी जा सकती है।

श्लोक (23)- व्यावर्तमाना तु तर्कणीयेति भावपरीक्षा।।

अर्थ- जो स्त्री इशारे भी करे लेकिन फिर भी संभोग करने से पीछे हटे तो सोचना चाहिए कि वह अपने मन से यह बात कह रही है या सिर्फ नखरे दिखाने के लिए ही बोल रही है।

श्लोक (24)- भवन्ति चात्र श्लोकाः- आदौ परिचयं कुर्यात्तत्श्च परिभाषणम्। परिभाषणसंमिश्रं मिथश्चाकार-वेदनम्।।

अर्थ- सबसे पहले स्त्री से जान-पहचान कर लेनी चाहिए। उसके बाद बातों को आगे बढ़ाना चाहिए। इस बातचीत में ही एक-दूसरे के भावों का आदान-प्रदान कर लेना चाहिए।

श्लोक (25)- प्रत्युत्तरेण पश्येच्चेदाकारस्य परिग्रहम्। ततोऽभियुञ्जीत नरः स्त्रियं विगतसाध्वसः।।

अर्थ- स्त्री के इशारा करने पर अगर उसका जवाब पुरूष को मिल जाता है तो उसे बिना किसी डर के स्त्री के साथ संभोग क्रिया करने में लीन हो जाना चाहिए।

श्लोक (26)- आकारेणात्मनो भावं या नारी प्राक्प्रयोजयेत्। क्षिप्रमेवाभियोज्या सा प्रथमे त्वेव दर्शने।।

अर्थ- जो स्त्री पुरूष को इशारे करने के साथ ही अपने मन के भावों को भी जोड़ देती है ऐसी स्त्रियां पहली बार की मुलाकात में ही संभोग करने के लिए तैयार हो जाती है।

श्लोक (27)- श्लक्ष्णमाकारिता या तु दर्शयेत्स्फुटमुत्तरम्। सापि तत्क्षणसिद्धेति विज्ञेया रतिलालसा।।

freehindipdfbooks.com

अर्थ- किसी स्त्री को गुप्त संकेत दिए जाए और वह साफ जवाब दें तो समझ लेना चाहिए कि वह स्त्री संभोग करना चाहती है।

श्लोक (28)- धीरायामप्रगल्भायां परीक्षिण्यां च योषिति। एष सूक्ष्मो विधि प्रोक्तः सिद्धा एवं स्फुटं स्त्रियः।।

अर्थ- जो स्त्री स्वभाव से ही शर्मीली हो, उसके अंदर किसी किस्म की चालाकी न हो और पुरूष की परीक्षा करती हो तो ऐसी स्त्रियों के लिए सूक्ष्म विधि बताई गई है क्योंकि यह तो साफ है कि ऐसी स्त्री कभी न कभी संभोग जरूर करवाएगी।

जानकारी-

महर्षि वातस्यायन ने इस प्रकरण में ऐसी स्त्रियों के मन के भावों की परीक्षा करने के बारे में बताया है जिससे कि पुरूष संभोग करना चाहता है, उसे अपनी तरफ आकर्षित करने की कोशिश करता है, उससे दोस्ती बढ़ाना चाहता है लेकिन शर्मीले स्वभाव के कारण वह अपने मन के विचारों को जल्दी पुरूष पर प्रकट नहीं करती, उसे अपने साथ संभोग कराने का अवसर भी नहीं देती।

इसमें यह बताया गया है कि बहुत सी स्त्रियां कुछ ज्यादा ही शर्मीले स्वभाव की होती हैं। वह पुरूष से मिलती है, उसके साथ चुंबन और आलिंगन भी करती हैं लेकिन पुरूष द्वारा संभोग करने के लिए कहने पर टाल-मटोल करती रहती हैं। महर्षि वात्स्यायन के मुताबिक ऐसी स्त्रियों को पहले जान-पहचान बढ़ाकर मिलना-जुलना चाहिए। अच्छी तरह से जान-पहचान होने के बाद वह स्वयं ही पुरूष के साथ संभोग करने के लिए तैयार हो जाती है।

श्लोक- इति श्रीवात्स्यायनीये कामसूत्रे पारदारिके पञ्चमेऽधिरणे भावपरीक्षा तृतीयोऽध्यायः।

freehindipdfbooks.com

अध्याय 4 दूतीकर्म प्रकरण

श्लोक (1)- दशितेगिंताकारां तु प्रविरलदर्शनामपूर्वां च दूत्योपसर्पयेत्।।

अर्थ- जो स्त्री पुरूष पर अपने भाव संकेतों को तो प्रकट कर चुकी हो लेकिन फिर भी मिलने-जुलने से डरती हो तो उसे दूती द्वारा प्राप्त करना ही सही रहता है।

श्लोक (2)- सैनां शीलतोऽनुप्रविश्याख्यानकपटैः सुभंगकरणयोगैलोकवृत्तान्तैः कविकथाभिः पारदारिककथामिश्च तस्याश्च रूपविज्ञानदाक्षिण्यशीलानुप्रशंसाभिश्च तां रञ्जयेत्।।

अर्थ- दूती जिस स्त्री को पुरूष के लिए पटा रही हो उसके घर के अंदर अच्छे बर्ताव का परिचय देकर प्रवेश करना चाहिए। इसके अलावा कहानियों से, सुंदरता को बढ़ाने वाले तरीकों से, बातचीत से उसको खुश करना चाहिए।

श्लोक (3)- कथमेवंविधायास्तवायमित्थंफभूतः पतिरिति चानुशयं ग्राहयेत्।।

अर्थ- दूती को स्त्री के दिल में उसके पति के लिए बुरी बातें बोलकर नफरत आदि पैदा करनी चाहिए जैसे कि तुम तो रूप का खजाना हो तुमने क्या सोचकर ऐसे पति से विवाह कर लिय़ा।

श्लोक (4)- न तव सुभगे दास्यमपि कर्तुं युक्त इति ब्रूयात्।।

अर्थ- तुम्हारा पति तो तुम जैसी खूबसूरत स्त्री का नौकर बनने लायक भी नहीं है।

श्लोक (5)- मन्दवेगतामीर्ष्यालुतां। शठतामकृतज्ञतां चासंभोगशीलतां कदर्यतां चपलतामन्यानि च यानि तस्मिन् गुप्तान्यस्या अभ्याशे सति सद्भावेऽतिशयेन भाषेत्।।

अर्थ- दूती को स्त्री से उसके पति के बारे में जितनी भी बुरी से बुरी बातें है कहनी चाहिए कि तुम्हारा पति कितना ठंडा है, वह सबसे जलता है, धूर्त है, वह सारे गंदे काम करता है आदि।

श्लोक (6)- येन च दोषेणोद्विगां लक्षचेत्तनैवानुप्रविशेत्।।

अर्थ- अपने पति के जिस दोष को सुनकर स्त्री को बेचैनी होती नजर आए उसी दोष को ज्यादा बढ़ा-चढ़ाकर बताना चाहिए।

श्लोक (7)- बदासौ मृगी तदा नैव शशतादोषः।।

अर्थ- यदि वह स्त्री हो तो उसके पति पर शक होने का इल्जाम न लगाएं।

श्लोक (8)- एतेनैव वाडवाहस्तिनीविषयश्चोक्तः।।

freehindipdfbooks.com

अर्थ- अगर स्त्री की योनि कम गहराई वाली होती है तो उसके पति पर छोटे लिंग होने का दोष नहीं लगाना चाहिए। उस समय पति के लिंग को बड़ा बताना ही दोष होगा। इस तरह अगर स्त्री बड़वा या हस्तिनी हो तो उसके पति को अश्व या वृष न बोलकर शश कहना ही सही होगा।

श्लोक (9)- नायिकाया एव तु विश्वास्यतामुपलभ्य दूतीत्वेनोपसर्पयेत्प्रथमसाहसायां सूक्ष्मभावायां चेति गोणिकापुत्रः।।

अर्थ- गोणिकापुत्र के मतानुसार दूती को स्त्री का विश्वासपात्र बनकर अपने दूतकार्य से उसे अपने घर पर बुलाना चाहिए लेकिन उसी स्त्री को जो पहली बार किसी पराए पुरूष से मिलने की हिम्मत करती हो या अपनी गूढ भाषा को जाहिर न करती हो।

श्लोक (10)- सा नायकस्य चरितमनुलोमतां कामितानि च कथयेत्।।

अर्थ- स्त्री को अपने घर पर बुलाकर पुरूष के अच्छे स्वभाव और गुणों के बारे में बताना चाहिए। उसके मन के भावों को बताना चाहिए और संभोग के आदि में क्या भाव होता है, बीच में कैसा होता है और आखिरी में कैसा होता है।

श्लोक (11)- प्रसृतसद्भावायां च युक्तया कार्यशरीरमित्थं वदेत्।।

अर्थ- अगर स्त्री को अपने पति धर्म से हटता हुआ सा प्रतीत हो तो उससे इसी तरह से बात करनी चाहिए।

श्लोक (12)- श्रृणु विचिमिदं सुभगे, त्वां किल दृष्दवामुत्रासावित्थं गोत्रपुत्रो नायकश्चित्तोन्मादमनुभवति। प्रकृत्या सुकुमारः कदाचिदन्यत्रापरिक्लिष्टपूर्वस्तपस्वी। ततोऽधुना शक्यमनेन मरणमप्यनुभवितुमिति वर्णयेत्।।

अर्थ- दूती को स्त्री से कहना चाहिए कि तुम्हारी खूबसूरती पर एक पुरूष बहुत ही ज्यादा फिदा हो चुका है। वह बहुत ही अच्छे स्वभाव का है और अगर उसने तुझे हासिल नहीं किया तो वह तड़प-तड़प कर अपनी जान दे देगा।

श्लोक (13)- तत्र सिद्धा द्वितीयेऽहनि वाचि वक्रे दृष्टयां च प्रसादमुपलक्ष्य पुनरपि कथां प्रवर्तयेत्।।

अर्थ- अगर दूती की ऐसी बातों को सुनकर स्त्री रोमांचित हो जाती है तो दूती को दूसरे दिन फिर से उसके मूड के अनुसार बातचीत करनी चाहिए।

श्लोक (14)- श्रृण्वत्यां चाहल्याविमारकशाकुन्तलादीन्यन्यान्यपि लौकिकानि च कथयेत्तयुक्तानि।।

अर्थ- जब स्त्री दूती की बातों को सुनने में पूरी तरह से मशरूफ हो जाए तो उसी समय उसे पुराने समय की ऐसी स्त्रियों के किस्से-कहानियां सुनाने चाहिए जो पराए पुरूष के साथ संबंध रखती हो।

freehindipdfbooks.com

श्लोक (15)- वृपतां चतुःषष्टिविज्ञतां सौभाग्यं च नायकस्य। श्लाघनीयतां (या) चास्य प्रच्छन्नं संप्रयोगं भूतमभूतपूर्व वा वर्णयेत्।।।

अर्थ- स्त्री के संभोग करने की जोरदार शक्ति, संभोग कलाओं में उसकी कुशलता, उसकी सौभाग्यशीलता तथा अच्छाईयों के बारे में बताकर ऐसी खूबसूरत स्त्री नाम लेकर बताना चाहिए कि वह उससे संभोग करा चुकी है।

श्लोक (16)- आकारं चास्या लक्षयेत्।।

अर्थ- स्त्री को इतना बताकर फिर उसकी भाव आदि को भी परखना चाहिए।

श्लोक (17)- सविहसितं दृष्ट्वा संभाषते।।

अर्थ- अपनी जिन कोशिशों के बल पर दूती स्त्री के भावों को पता कर लेती है उन्हे बताते हैं।

देखकर हंसती हुई बोलती है।

श्लोक (18)- आसने चोपनिमन्त्रयते।।

अर्थ- आसन आदि पर आदरपूर्वक बैठने के लिए कहती है।

श्लोक (19)- क्वासितं क्व शयितं भुक्तं क्व चेष्टितं किं वा कृतामिति पृच्छति।।

अर्थ- कहां भोजन किया, कहां पर क्या किया, कहां बैठी, कहां पर सोई आदि पूछती है।

श्लोक (20)- विवक्ते दर्शयत्यात्मानम्।।

अर्थ- एकांत में अपने आप को दिखाती है।

श्लोक (21)- चिन्तयन्ती निःश्वसिति विजृम्भते च।।

अर्थ- कुछ सोचते हुए लंबी-लंबी सांसे लेती हुई, जंभाई लेती है।

श्लोक (22)- प्रीतिदायं च ददाति।।

अर्थ- प्यार का तोहफा देती है।

श्लोक (23)- इष्टेपूत्सवेषु च स्मरति।।

अर्थ- अपने घर के खास कामों और पार्टी आदि में उसे बुलाती है।

श्लोक (24)- पुनर्दर्शनानुबन्धं विसृजति।।

freehindipdfbooks.com

अर्थ- दुबारा से आने के वादे पर वह उसे विदा करती है।

श्लोक (25)- नायकस्य शाठ्यचापल्यसंवद्धान्दोपान्ददाति।।

अर्थ- पुरूष की चंचलताओं तथा धूर्तता को दोष कहती हुई दूती बताती है कि वह एक स्त्री पर तो कभी टिकता ही नहीं है।

श्लोक (26)- पूर्वप्रवृत्तं च तत्संदशेन कथाभियोगं च स्वयमकथयन्ती तयोच्यामानमाकाक्षति।।

अर्थ- स्त्री मन ही मन में यह सोचती है कि पुरूष के देखने-वेखने की बात दूती स्वयं ही छेड़े।

श्लोक (27)- नायकमनोरथेपु च कथ्यमानेपु सपरिभवं नाम हसति। न च निर्बदतीति।।

अर्थ- दूती जब पुरूष के मन की बात बताती है तो धत कहकर हंस देती है लेकिन यह नहीं कहती कि तुम्हारी चाहत पूरी हो जाएगी।

श्लोक (28)- दूत्येनां दर्शिताकारां नायकाभिज्ञानैरुपवृंहयेत्।।

अर्थ- इस तरह की भाव-भंगिमाओं को देखकर दूती को स्त्री को पुरूष की उन्हीं पुरानी विशेषताओं को बताना चाहिए।

श्लोक (29)- असंस्तुतां तु गुणकथनैरनुरागकथाभिश्चावर्जयेत।।

अर्थ- जो स्त्री पुरूष के बारे में जानती न हो उसे प्रेमी के गुण बताकर और उसकी प्रेम कहानियां सुनाकर अपनी बातों के जाल में फंसाना चाहिए।

श्लोक (30)- नासंस्तुतादृष्टाकारयोर्दूत्यमस्तीतयौद्दालकिः।।

अर्थ- श्वेतकेतु औयालिक के मतानुसार जो स्त्री पुरूष से पूरी तरह से परिचित न हो उसके साथ दूतीकार्य नहीं हो सकता है।

श्लोक (31)- असंस्तुतयोरपि संसृष्टाकारयोरस्तीति बाभ्रवीयाः।।

अर्थ- बाभ्रवीय आचार्यों के मुताबिक एक-दूसरे को न जानने पर भी अगर भाव-भंगिमा, संकेत मिल चुके हो तो दूतीकार्य हो सकता है।

श्लोक (32)- संस्तुतयोरप्यसंसृष्टाकारयोरस्तीति गोणिकापुत्रः।।

अर्थ- गोणिकापुत्र के मतानुसार बिना जान-पहचान और संकेत के भी दूतीकार्य हो सकता है।

freehindipdfbooks.com

श्लोक (33)- असंस्ततयोरदृष्याकारयोरपि दूतीप्रत्ययादिति वात्स्यायनः।।

अर्थ- आचार्य वात्स्यायन के मतानुसार बिना जान-पहचान और संकेत के भी दूतीकार्य हो सकता है।

श्लोक (34)- तासां मनोहराण्युपायनानि ताम्बूलमनुलेपनं स्त्रजमगंलीयकं वासो वा तेन प्रहितं दर्शयेत्।।

अर्थ- बिना जान-पहचान के पुरूष स्त्री के लिए मनपसंद चीजें, पान, केशर, माला, अंगूठी और अच्छे कपड़े भेजने चाहिए।

श्लोक (35)- वाससि च कुगंमागंमञ्जलिं निदध्यात्।।

अर्थ- उपहार में दिए जाने वाले कपड़ो पर केसर के थापे और छाप मारनी चाहिए।

श्लोक (36)- पत्रच्छेद्यानि नानाभिप्रायाकृतीनि दर्शयेत्। लेखपत्रगर्भाणि कर्णपत्राण्यापीगंश्च।।

अर्थ- मुलायम पत्तों पर कई तरह के अभिप्रायों की शक्लें बनाकर, रति, क्रोध, शोक आदि प्रकट करना चाहिए।

श्लोक (37)- तेषु स्वमनोरथाख्यापनम्। प्रतिप्राभृतदाने चैनां नियोजयेत्।।

अर्थ- उन लेखों के अंतर्गत अपना मकसद और अपनी मनोकामना जाहिर करनी चाहिए।

श्लोक (38)- स तु देवताभिगमने यात्रायामुद्यानक्रीडायां जलावतरणे विवाहे यज्ञव्यसनोत्सवेष्वगनुयुत्पाते चौरविभ्रमे जनपदस्य चक्रारोहणे प्रेक्षाव्यापारेषु तेषु तेषु च कार्येष्वति बाभ्रवीयाः।।

अर्थ- वाभ्रवीय आचार्यों के मुताबिक संभोग तो देवपूजन, देवयात्रा में जाते समय, जंगल में घूमते समय, पानी में तैरते समय, विवाह के मौके पर, यज्ञ, जश्न तथा मृत्यु के मौके पर, आग लग जाने पर, खेल तमाशों में करना संभव होता है।

श्लोक (39)- सखीभिक्षुकीक्षपणिकातापसीभवनेषु सुखोपाय इति गोणिकापुत्रः।।

अर्थ- गोणिकापुत्र के मतानुसार सहेली, सधुवाइन, भिखारिन, तपस्विनी आदि के घर में पुरूष और स्त्री का मिलना-जुलना आसानी से हो सकता है।

श्लोक (40)- तस्या एव तु गेहे विदितनिष्क्रमप्रवेशे चिन्तितात्ययप्रतीकारे प्रवेशनसुपपन्न निष्क्रमणमविज्ञातकालं च तन्नियं सुखोपायं चेति वात्स्यायनः।।

अर्थ- आचार्य वात्स्यायन के मतानुसार अगर स्त्री के घर में घूमने का रास्ता पुरूष को पता हो तो उसके घर में ही संभोग हो सकता है।

freehindipdfbooks.com

श्लोक (41)- निसृष्टार्था परिमितार्था पत्रहारी स्वयंदूती मूढदूती भार्यादूती मूकदूती वातदूती चेति दूतीविशेषाः।।

अर्थ- निसृष्टार्थ परिमितार्थ, पत्रहारी, स्वयंदूती, मूढदूती, भार्यादूती, मूकदूती और बातदूती 6 प्रकार की दूती होती है।

श्लोक (42)- नायकस्य नायिकायाश्च यथामनीषितमर्थमुपलभ्य स्वबुद्धया कार्यसम्पादिनी निसृष्टार्था।।

अर्थ- निसृष्टार्थ दूती- जो पुरूष तथा स्त्री के अभिलषित मकसद को जानकर अपने दिमाग से काम करती है उसे निसृष्टार्थ दूती कहते हैं।

श्लोक (43)- सा प्रायेण संस्तुतसंभाषणयोः।।

अर्थ- जिन स्त्री और पुरुषों में जान-पहचान और मेल-मिलाप रहता है उन्हीं का काम करती हैं।

श्लोक (44)- नायिकया प्रयुक्ता असंस्तुतसंभाषणयोरपि।।

अर्थ- स्त्री को भेजने पर बिना जान-पहचान तथा मिलन के भी काम करती है।

श्लोक (45)- कौतुकाच्चानुरूपौ युक्ताविमौ परस्परस्येत्यसंस्तुतयोरपि।।

अर्थ- यदि यह दूती रूप, गुण, शील, उम्र में बराबर वाले स्त्री और पुरूष को अपनी तरफ से मिलाना चाहे तो मिला सकती हैं।

श्लोक (46)- कार्यैकदेशमभियोगैकदेशं चोपलभ्य शेषं संपादयतीति परिमितार्था।।

अर्थ- परिमितार्था दूती- स्त्री और पुरूष से मिलन के किसी भी भाग को जानकर बाकी से उपाय खुद ही कर लेने चाहिए तो वह दूती परिमितार्था कहलाती है।

श्लोक (47)- सा दृष्टपरस्पाकारयोः प्रविरलदर्शनयोः।।

अर्थ- जहां पर स्त्री और पुरूष एक-दूसरे के संकेत देख चुके हो लेकिन उनका प्रेम कभी-कभी दिखाई पड़े तो उनको संभोग क्रिया कराने में परिमितार्था दूती काम करती है।

श्लोक (48)- संदेशमात्रं प्रापयतीति पत्रहारी।।

अर्थ- पत्रहारी दूती- स्त्री और पुरूष के संदेश तथा पत्र आदि ले जाने का काम करती हो तो उसे पत्रहारी दूती कहते हैं।

श्लोक (49)- सा प्रगाढसद्धावयोः संसृष्टयोश्च देशकालसंबोधनार्थम्।।

freehindipdfbooks.com

अर्थ- यह दूती उन स्त्री और पुरुषों के मिलने-जुलने या संभोग करने की जगह तय करती है जो आपस में प्रेम के जाल में बंध चुके हो या कितनी बार मिले चुके हो।

श्लोक (50)- दौत्येन प्रहितान्यया स्वयमेव नायकमभिगच्छेदजानती नाम तेन सहोपभोगं स्वप्ने वा कथयेत्। गोत्रस्खलितं भाया चास्य निन्देत्। तद्वयपदेशेन स्वयमीर्ष्या दर्शयेत्। नखदशनचिह्नितं वा किंचिद्दद्यात्। भवतेऽहमादौ दातुं संकल्पितेति चाभिदधीत। मम भार्याया का रमणीयेति विविक्ते पर्यनुयुञ्जत सा स्वयंदूती।।

अर्थ- स्वयंदूती- जब कोई प्रेमिका अपने प्रेमी के पास किसी दूती को भेजती है तथा वह दूती स्वयं ही उस प्रेमी पर मोहित हो जाती है तो उसे स्वयंदूती कहते हैं। उससे ज्यादा परिचय न होने के बावजूद भी वह सपने में उससे संभोग करने की इच्छा रखती है तथा इस बात की निन्दा करती है कि मेरी तो किस्मत ही खराब है अब तो आप मुझे कभी याद ही नहीं करते और अपनी पत्नी के पास ही भागते रहते हैं। अगर वह खूबसूरत होती तो उसे बुलाना भी सही था। वह इस वह कहती हुई प्रेमी की पत्नी से जलन प्रकट करती है। भाव-भंगिमा जाहिर करने के लिए नाखून और दांतों के निशान बनाकर किसी चीज को पुरूष को देना चाहिए। रात में पान देते समय अपने प्यार का प्रतीक रागात्मक चीजों के द्वारा प्रदान कर दें तथा उससे कहे कि मेरे पिता ने पहले आपके साथ ही मेरी शादी करने का फैसला किया था। वैसे भी मै आपकी पत्नी से कहीं ज्यादा खूबसूरत हूं। वह अकेले में पुरूष से इस प्रकार का अनुयोग करती है।

श्लोक (51)- तस्या विविक्ते दर्शनं प्रतिग्रहश्च।।

अर्थ- खुद दूती को देखने और उससे संदेश लेने-देने में एकांत होना जरूरी है।

श्लोक (52)- प्रतिग्रहच्छेलनान्यामभिसंधायास्याः संदेशश्रावणद्वारेण नायकं साधयेत् तां चोपहन्यात्सापि स्वयंदूती।।

अर्थ- जो प्रेमिका संदेश प्रेमी से लाने के बहाने अभिसंधि करके प्रेमिका का संदेश सुनाने का उपक्रम करके प्रेमी को अपने ऊपर मोहित कर लेती है, प्रेमिका को अपने प्रेमी से मिलने नहीं देती उसको भी स्वयंदूती कहा जाता है।

श्लोक (53)- एतया नायकोऽप्यन्यदूतश्च व्याख्यातः।।

अर्थ- स्वयंदूत- ऐसे ही पुरूष किसी पुरूष का संदेश ले जाने के बहाने स्त्री के पास जाता है और संदेश देने वाले पुरूष के बजाय खुद ही उसे अपने जाल में फंसा लेता है। इसे ही स्वयंदूत कहा जाता है।

freehindipdfbooks.com

श्लोक (54)- नायकभार्या मुग्धां विश्वास्यायन्त्रणयानुप्रविश्य नायकस्य चेष्टितानि पृच्छेत्। योगान्शिक्षयेत्। साकारं मंण्डयेत्। कोपमेनां ग्राहयेत्। एवं च प्रतिपद्यस्वेति श्रावयेत्। स्वयं चास्यां नखदशनपदानि निर्वर्तयेत्। तेन द्वारेण नायकमाकारयेत्सा मूढदूती।।

अर्थ- मूढदूती- प्रेमी की मुग्धा प्रेमिका को भरोसा दिलाकर, बिना किसी कोशिश के उसके दिल में छुपी हुई प्रेमी की बातें पूछकर, संभोग की क्रियाएं सिखाए। मकसद जाहिर करने वाली श्रंगार रचना कराएं। पति से उसका झगड़ा करा दें, खुद ही उसे शरीर के अंगों में दांतों और नाखूनों से निशान बना दें इसके बाद उस पर अपने मकसद को जाहिर करें। ऐसी स्त्री को मूढदूती कहा जाता है।

श्लोक (55)- तस्यास्तेयैव प्रत्युत्तराणि योजयेत्।।

अर्थ- अगर कोई स्त्री ऐसी मूढदूती से काम करा रही हो तो पुरूष को उसे बदल देने के लिए उसी के साथ संभोग क्रिया करनी चाहिए।

श्लोक (56)- स्वभार्या वा मूढां प्रयोज्य तया सह विश्वासेन योजयित्वा तयैवाकारयेत्। आत्मनश्च वैचक्षण्यं प्रकाशयेत्। सा भार्या दूती तस्यास्तयैवाकाग्रहणम्।।

अर्थ- भार्यादूती- पुरूष जिस स्त्री से संभोग करना चाहता हो उसके साथ अपनी पत्नी की जान-पहचान कराके उसकी सबसे प्यारी सहेली बना देना चाहिए। फिर उसी से अपने भावों को परिचित कराएं। ऐसे मौके पर अगर वह स्त्री अपनी कुशलता का परिचय देती है तो उसे भार्यादूती कहा जाता है। स्त्री का भाव उसी के द्वारा जाना जाता है।

श्लोक (57)- बालां वा परिचारिकामदोषज्ञामदुष्टेनोपायेन प्रहिणुयात्। तत्र स्त्रजि कर्णपत्रे वा गूढलेखनिधानं नखदशनपदं वा सा मूकदूती। तस्यास्तयैव प्रत्युत्तरप्रार्थनाम्।।

अर्थ- मूकदूती- जिसे अच्छाई और बुराई के बारे में ज्ञान न हो, ऐसी दासी आदि को अपनी प्रेमिका के घर खेलने के लिए भेज देना चाहिए। उस दासी के साथ प्रेमिका की जान-पहचान हो जाने पर कर्णपत्र अथवा माला में प्रेमपत्र रखकर नाखून तथा दांत के निशान बना दें। इस प्रकार काम करने वाली दासी को मूकदूती कहा जाता है।

श्लोक (58)- पूर्वप्रस्तुतार्थलिगंसंबद्धमन्यजनाग्रहणीयं लौकिकार्थं द्वयर्थं वा वचनमुदासीना या श्रावयेत्सा वातदूती। तस्या अपि तयैव प्रत्युतरप्रार्थनमिति तासां विशेषाः।।

अर्थ- वातदूती- प्रेमिका की सांकेतिक भाषा, श्लेषभाषा को जो उदासीन रहकर प्रेमिका को सुनाएं तथा उससे उसी भाषा में जवाब भी मांगें तो उसे वातदूती कहते हैं।

श्लोक (59)- भवन्ति चात्र श्लोकाः- विधनेक्षणिका दासी भिक्षुकी शिल्पकारिका। प्रविशत्याशु विश्वासं दूतीकार्यं च विन्दति।।

freehindipdfbooks.com

अर्थ- इस विषय के श्लोक हैं-

विधवा, घराने वाली, भिखारिन, सगुन, नायन आदि स्त्रियां किसी के साथ भी जल्दी घुल-मिल जाती हैं और विश्वासपात्र बन जाती हैं और फिर दूती का काम करती हैं।

श्लोक (60)- संक्षेपेण दूतीकर्माण्याह- विद्वेषं ग्राहयेत्पत्यौ रमणीयानि वर्णयेत्। चित्रान्सुरतसंभोगानन्यासामपि दर्शयेत्।।

अर्थ- दूती पति से पत्नी को झगड़ा करा दें, प्रेमिका को उससे मिलाना चाहें, उसकी तारीफ करें, दूसरी स्त्रियों के सामने भी अश्लील चित्र आदि दिखाएं।

श्लोक (61)- नायकस्यानुरागं च पुनश्च रतिकौशलम्। प्रार्थनां चाधिकस्त्रीभिरवष्टम्भं च वर्णयेत्।।

अर्थ- प्रेमी के संभोग तथा प्यार आदि का वर्णन करें, प्रेमिका से भी बढ़कर सुंदरी तथा अमीर स्त्रियों का वर्णन सुनाएं कि वह प्रेमी पर मोहित है। इसके साथ ही प्रेमिका के कठोर निश्चय को भी जाहिर करें।

श्लोक (62)- असंकल्पित्मप्यर्थमुत्सृष्टं दोषकारणात्। पुनरावर्तयत्येव दूती वचनकौशलात्।।

अर्थ- दूती अपनी बातों के द्वारा निन्दित, हेय, परित्यक्त तथा अनाहत प्रेमी को भी फिर से प्रेमिकाओं का प्रेमी बना देने में माहिर बना देती है।

जानकारी- इस अध्याय के पहले और दूसरे अध्याय में यह बताया जा चुका है कि पुरूष द्वारा जिस पराई स्त्री को वश में करने में अड़चने आती हो वहां पर उसे दूतियों का सहारा लेना चाहिए।

कामसूत्र के रचनाकार आचार्य वात्स्यायन 2 प्रकार की दूतियां बताई हैं- साधारण और खास। निसृष्टार्था, परिमितार्था, पत्रहारी, स्वयंदूती, मूढदूती, भार्यादूती, मूकदूती और वातदूती समेत 8 तरह की साधारण किस्म की दूतियां होती है।

दूती को चाहिए कि वह पहले प्रेमिका से बहुत गहरी दोस्ती कर ले, उसकी ज्यादा से ज्यादा तारीफ करे और इसके बाद प्रेमी से बात करनी शुरु करे।

कामसूत्र में 8 प्रकार की दूतियों के बारे में बताया गया है। इन दूतियों का चुनाव कार्य, जरूरत और मौके की उपयोगिता को ध्यान में रखकर किया गया है। उनके लक्षण इस प्रकार से हैं-

निसृष्टार्था-

प्रेमी के इरादों को जानकर अपनी ही बुद्धि से जो कार्य को पूरा करती है वह निसृष्टार्था दूती होती हैं। जब प्रेमी और प्रेमिका में आपस में देखा-देखी, बातचीत हो चुकी हो, तब इस प्रेमी की उपयोगिता है।

परिमितार्था-

freehindipdfbooks.com

जिसको कुछ उपाय बताए जा रहे हो, फिर जो कुछ बाकी रह जाता है उसे वह अपने तजुर्बे से समझकर प्रेमी और प्रेमिका का नजरिया बनाती है उसे परिमितार्था कहते हैं।

जब प्रेमी और प्रेमिका एक दूसरे को देख तो लेते हैं लेकिन रोजाना नहीं और आपस में मिल भी नहीं पाते हैं तो उस समय परिमितार्था दूती उनको मिलाने की कोशिश करती हैं।

पत्रहारी दूती-

जो दूती प्रेमी और प्रेमिका के प्रेम पत्रों को एक-दूसरे पहुंचाने का काम करती है उसे पत्रहारी दूती कहते हैं।

जो प्रेमी और प्रेमिका एक-दूसरे के साथ बहुत ही ज्यादा गहरे प्रेम में बंध चुके हो और आपस में संभोग भी कर चुके हो तो उनके बीच पत्रहारी दूती यही काम करती है कि जिस समय प्रेमी या प्रेमिका की तरफ से संभोग करने का निश्चय किया जाता है वह उसकी सूचना प्रेमी या प्रेमिका को दे देती है।

स्वयंदूती-

जो स्त्री किसी संदेश आदि का बहाना करके पुरूष के पास में जाती है तथा वहां उससे अपनी तारीफ करके या दूसरे तरीकों से प्रेमी को मोहित करके उससे संभोग करती है उसे स्वयंदूती कहा जाता है। स्वयंदूती का अर्थ है अपने लिए स्वयं दूती बन जाना।

मूढदूती-

स्त्री जब किसी पुरूष को चाहती है तो उसको अपने ऊपर आकर्षित करने के लिए वह चालाक स्त्री प्रेमी की सीधी-सादी पत्नी से प्रेम संबंध बनाकर प्रेमी की पसंद, उसका संभोग का राज आदि जानकर फिर उसी के अनुसार भाव-भंगिमाएं, कटाक्ष-विलास करके अपने मकसद को पूरा कर लेती है। तब प्रेमी की सीधी-सादी पत्नी मूढदूती कहलाती है।

भार्यादूती-

जब कोई प्रेमी अपनी प्रेमिका को फंसाने के लिए उसके पीछे अपनी पत्नी को लगा देता है और फिर अपने मकसद को पूरा करता है तो उस प्रेमी की पत्नी को भार्यादूती कहा जाता है। भार्यादूती मूढदूती ही बना करती है।

मूकदूती-

किसी नादान, अंजान नौकरानी या बालिका से माला या कान के फूल के भीतर छिपाकर प्रेम-पत्रिका भेजी जाए तो उसे मूकदूती कहा जाता है।

वातदूती-

जो प्रेमी और प्रेमिका अपने बीच की बातों को इशारों या किसी ऐसी भाषा में कहें कि जिसे दूसरे लोग न समझ पाए। इसके साथ ही अपनी बात भी उदासीनों की तरह सुना दें तो उसे वातदूती कहा जाता है।

दूसरे अधिकरण में आचार्य वात्स्यायन ने ग्राम ब्रज प्रत्यन्त योषिद्विश्च नागरकस्य लिखकर

freehindipdfbooks.com

देहाती, ग्वालिन और भीलनी वर्ग की स्त्री के साथ संभोग करने वाले, कामकला में निपुण, नागरक को खलरत करने वाला बताया है। आचार्य वात्स्यायन की इस बात को सिरे से नकारते हुए एक भील युवक अपनी भील प्रेमिका से व्यंजनापूर्ण शब्दों में कहता है कि मुझ गरीब की यही प्रार्थना है कि कुचयुग्मों को पत्तों से न ढको।

श्लोक- इति श्रीवात्स्यायनीये कामसूत्रे पारदारिके पञ्चमेऽधिकरमे दूतीकर्माणि चतुर्थोऽध्यायः।

freehindipdfbooks.com

अध्याय 5 ईश्वरकामितम प्रकरण

श्लोक (1)- न राज्ञां महामात्राणां वा परभवनप्रवेशो विद्यते। महाजनेन हि चरितमेषां दृश्येतऽनुविर्धग्यते च।।

अर्थ- राजा, मंत्री और विद्वान लोग दूसरों के घरों में आसानी से प्रवेश नहीं कर सकते क्योंकि प्रजा इनके चरित्रों को देखकर ही आचरण करती है।

श्लोक (2)- सवितारमुद्यन्तंत्रयो लोकाः पश्यन्ति अनूद्यन्ते च। गच्छन्तमपि पश्यन्त्यनुप्रतिष्ठन्ते च।।

अर्थ- एक सामान्य नियम को तो सभी लोग जानते हैं कि तीनों लोक उगते सूरज को ही देखकर उठते हैं और सूरज के डूबने पर सो जाते हैं।

श्लोक (3)- तस्मादशक्यत्वाद्गर्हणीयत्वाच्चेति न ते वृथा किंचिंदाचरेयुः।।

अर्थ- राजाओं, मंत्रियों और विद्वानों को पराई स्त्रियों के चक्कर में पड़ने जैसे बुरे कामों को नहीं करना चाहिए।

श्लोक (4)- अवश्यं त्वाजरितव्ये योगान्प्रयुञ्जारन्।।

अर्थ- उत्तेजना के कारण या किसी दूसरे कारण से अगर पराई स्त्री के चक्कर में पड़ जाएं तो सही तरीकों को अपनाना चाहिए।

श्लोक (5)- ग्रामाधिपतेरायुक्तकस्य हलोत्थवृत्तिपुत्रस्य यूनो ग्रामीणयोषितो वचनमात्रसाध्याः। ताश्चर्षण्य इत्याचक्षते विटाः।।

अर्थ- गांव के युवा मुखिया, युवा अधिकारी या पटवारी का युवा पुत्र अगर गांव की किसी स्त्री को संभोग करने के लिए कहते हैं तो वह तुरंत ही तैयार हो जाती है। विद्वानों के मुताबिक ऐसी स्त्रियों को चर्पणी कहा जाता है।

श्लोक (6)- ताभिः सह विष्टिकर्मसु कोष्ठागारप्रवेशे द्रव्याणां निष्क्रमणप्रवेस- नयोर्भवनप्रतिसंस्कारे क्षेत्रकर्मणि कर्पासोर्णातसीशणवल्कलादाने सूत्रप्रतिग्रहे द्रव्याणां क्रयविक्रयविनिमयेषु तेषु तेषु च कर्मसु संप्रयोगः।।

freehindipdfbooks.com

अर्थ- जब चर्पणी स्त्री कूटने, पीसने, पकाने के सामान को रखने, उठाने, घर की सफाई करने के लिए घर में प्रवेश करे, ऊन, रुई, अलसी, सूत लेने के लिए आए या जिस वक्त उनसे सारी चीजें रखवाई जा रही हो तो इन कामों को करते समय छोटे अधिकारी उनके साथ संभोग कर सकते हैं।

श्लोक (7)- तथा व्रजयोषिद्भिः सह गवाध्यक्षस्य।।

अर्थ- जिस समय ग्वालिन दही बिलो रही हो तब गवाध्यक्ष उसके साथ संभोग कर सकता है।

श्लोक (8)- विधवानाथाप्रव्रजिताभिः सह सूत्राध्यक्षस्य।।

अर्थ- अनाथ, संन्यासिन या विधवा स्त्रियों से साथ सूत्राध्यत्र संभोग क्रिया कर सकता है।

श्लोक (9)- मर्मज्ञत्वाद्रात्रावटने चाटन्तीभिर्नागरस्य।।

अर्थ- रात के समय नगर में क्या चल रहा है यह पता करने के लिए पहरा देता हुआ नगराध्यक्ष घूमने वाली स्त्रियों से साथ संभोग कर सकता है।

श्लोक (10)- क्रयविक्रये पण्याध्यक्षस्य।।

अर्थ- माल को खरीदते या बेचते समय बाजार का पण्याध्यक्ष बाजारू स्त्रियों के साथ संभोग क्रिया कर सकता है।

श्लोक (11)- अष्टमीचन्द्रकौमुदीसुवसन्तकादिषु पत्तननगरखर्वटयोषितामीश्वर- भवने सहान्तः पुरिकाभिः प्रायेण क्रीड़ा।

अर्थ- बहुला अष्टमी, कौमुदी महोत्सव, सुवसन्तक आदि त्यौहारों के दिन जिला, तहसील या राजधानी की रहने वाली और महलों में रहने वाली स्त्रियों के साथ अक्सर संभोग क्रियाएं होती रहती हैं।

श्लोक (12)- तत्र चापानकान्ते नगरस्त्रियो यथापरिचयमन्तः पुरिकाणांपृथक- पृथक्भोगावासकान्प्रविश्य कथाभिरासित्वा पूजिताः प्रपीताश्चोपप्रदोषं निष्क्रामयेयुः।।

अर्थ- उन क्रीड़ाओं में शराब आदि पीकर शहरी स्त्रियां अपने परिचय की महल की स्त्रियों से साथ अलग-अलग गुप्त स्थानों में बैठकर समय बिताती हैं तथा वहां पर स्वागत-सत्कार, खाना-पीना करके शाम को बाहर निकलती हैं।

श्लोक (13)- तत्र प्रणिहिता राजदासी प्रयोज्यायाः पूर्वसंसृष्टा तां तत्र संभाषेत।।

अर्थ- वहां पर राजा के द्वारा भेजी गई दासी उस स्त्री से बात करे जिसे महल में खासतौर पर राजा के साथ संभोग क्रिया करने के लिए जश्न के बहाने बुलाया गया हो।

freehindipdfbooks.com

श्लोक (14)- रामणीयकदर्शनेन योजयेत्।।

अर्थ- दासी को चाहिए कि उस स्त्री को महल की सुंदर चीजों को देखने में लगा दें।

श्लोक (15)- प्रागेव स्वभवनस्थां ब्रूयात्। अमुष्यां क्रीडायां तव राजभवनस्थानानि रामणीयकानि दर्शयिष्यामीति काले च योजयेत्। बहिःप्रवालकुट्टिमं ते दर्शयिष्यामि।।

अर्थ- दासी को चाहिए कि उस स्त्री के घर जाकर (जो राजा के साथ संभोग क्रिया करने के लिए आई हो) पहले ही बता आएं कि आप जब अगली बार महल में आएंगी तो आपको महल की सुंदर और सबसे कीमती चीजें दिखाई जाएंगी।

श्लोक (16)- मणिभूमिकां वृक्षवाटिकां मृद्वीकामण्डपं समुद्रगृहप्रासादान्गूढभित्तिसंचा-रश्चित्रकर्माणि क्रीड़ामृगान् यन्त्राणि शकुनान्व्याघ्रसिंहपञ्जरादीनि च यानि पुरस्ताद्वर्णितानि स्युः।।

अर्थ- मोतियों वाली फर्श, पेड़ों से भरी हुई वाटिका, अंगूर की लताओं का मंडप, समुद्रगृह महल जिसकी दीवारों पर से पानी बह रहा हो, ऐसे चित्र जो निर्जीव होते हुए भी बिल्कुल असली लग रहे हो, हंस, चकोर, शेर, हिरन आदि पंजरे में बंद जानवरों और पक्षियों को दिखाएं।

श्लोक (17)- एकान्ते च तद्वन्तमीश्वरानुरागं श्रावयेत्।।

अर्थ- जब कोई न हो तो उसे राजा के बारे में बताना शुरू करें।

श्लोक (18)- संप्रयोगे चातुर्य चाभिवर्णयेत्।।

अर्थ- उसे बातों ही बातों में यह भी बताएं कि राजा संभोग कला में कितना निपुण है।

श्लोक (19)- अमन्त्रश्रावं च प्रतिपत्रां योजयेत्।।

अर्थ- जब राजा उस स्त्री के साथ संभोग क्रिया कर ले तो उसके बाद दासी को उसे यह बात समझा देनी चाहिए कि वह इस बात को किसी और को न कहे।

श्लोक (20)- अप्रतिपद्यमानां स्वयमेवेश्वर आगत्योपचारैः सान्वितां रञ्जयित्वा संभूय च सानुरां विसृजेत्।।

अर्थ- राजा जिस स्त्री के साथ संभोग करना चाहता हो अगर वह दासी के कहने पर राजा के पास नहीं आती तो राजा को खुद ही उससे मिलकर उसे अपनी ओर आकर्षित करना चाहिए और संभोग करने के बाद प्यार से उसे विदा कर देना चाहिए।

freehindipdfbooks.com

श्लोक (21)- प्रयोज्यायाश्च पत्थरनुग्रहोचितस्य दारात्रित्यमन्तः पुरमौचित्यात्प्रवेशयेत्। तत्र प्रणिहिता राजदासिता समानं पूर्वेण।।

अर्थ- राजा जिस स्त्री पर फिदा हो और उसका पति राजा की कृपा का पात्र बनने लायक हो तो दासी को उसके घर की दूसरी स्त्रियों को भी प्यार और सम्मान से महल में ले आना चाहिए।

freehindipdfbooks.com

अध्याय 6 अन्तः पुरिका वृत प्रकरण

श्लोक (1)- नान्तः पुराणां रक्षणयोगात्पुरुषसंदर्शन विद्यते पत्युश्चैकत्वादनेक-कसाधारमत्वाच्चातृप्तिः। तस्मात्तानि प्रयोगत एव परस्परं रञ्जयेयुः।।

अर्थ- सुरक्षा को देखते हुए राजाओं के महलों में बहुत ज्यादा सख्त पहरा रहता है ताकि वहां पर कोई दूसरा पुरूष प्रवेश न कर सके। इन महलों में एक राजा की कई रानियां रहती हैं। इसी कारण से राजा सब रानियों की काम-उत्तेजना शांत नहीं कर पाता और वह रानियां आपस में ही समलैंगिकता द्वारा अपनी काम-वासनाओं की पूर्ति करती हैं।

श्लोक (2)- प्रयोगमाह- धात्रेयिकां सखीं दासीं वा पुरूषवदलंकृत्याकृतिसंयुक्तैः कन्दमूलफलावयवैर-पद्रव्यैर्वात्माभिप्रायं निवर्तयेयुः।।

अर्थ- रानियां धाय की पुत्री, नौकरानी या अपनी सहेली को पुरुषों की तरह कपड़े आदि पहनाकर बैंगन, मूली या गाजर आदि को नकली लिंग के रूप में बनाकर उन्हें ऊपर लिटाकर नकली प्रकार के संभोग से अपनी काम-उत्तेजना को शांत करती हैं।

श्लोक (3)- पुरूषप्रतिमा अव्यक्तलिंगाश्चधिशयीरन्।।

अर्थ- रानियां ऐसे पुरूषों को जिन्हें दाढ़ी-मूंछ नहीं आई होती, को स्त्रियों के कपड़े पहनाकर अपने पास सुलाती हैं।

श्लोक (4)- राजानञ्ज्र कृपाशीला विनापि भावयोगादायोजितापद्रव्या यावदर्थमेकया राज्या वह्वीभिरपि गच्छति। यस्यां तु प्रीतिर्वासिक ऋतुर्वा तत्राभिप्रायतः प्रवर्तन्त इति प्राच्योपचाराः।।

अर्थ- राजा अपनी बहुत सी रानियों के साथ बिना इच्छा के ही नकली लिंग लगाकर एक ही रात में संभोग क्रिया करता है। लेकिन जो रानी राजा को बहुत ही प्रिय होती है उनके साथ वह पूरे जोश से और प्राकृतिक संभोग क्रिया करता है।

श्लोक (5)- स्त्रीयोगेणैव पुरूषाणामप्यलब्धवृत्तीनां वियोनिषुविजातिषु स्त्रीप्रतिमासु केबलोपमर्दनाच्चाभिप्रायनिवृत्तिर्व्याख्याता।।

अर्थ- अगर किसी पुरूष को संभोग करने के लिए कोई स्त्री नहीं मिलती तो वह जानवरों जैसे बकरी, कुतिया या घोड़ी के साथ या हस्तमैथुन करके अपनी काम-उत्तेजना को शांत करते हैं।

श्लोक (6)- योषावेषांश्च नागरकान्प्रायेणान्तःपुरिकाः परिचारिकाभिः सह प्रवेशयन्ति।।

अर्थ- नौकरानियों के साथ राजमहल की रानियां नागरकों को भी अक्सर अपने महल में बुला लेती हैं।

freehindipdfbooks.com

श्लोक (7)- तेषामुपावर्तने धात्रेयिकाश्चाभ्यन्तरसंसृष्टा आयतिं दर्शयन्त्यः प्रयतेरन्।।

अर्थ- धाय की पुत्रियां या रानियों के साथ नकली संभोग क्रिया करने वाली उनकी सहेलियां नागरिकों को लालच देकर महल में ले जाती हैं।

श्लोक (8)- सुखप्रवेशितामपसारभूमिं विशालतां वेश्मनः प्रमादं रक्षिणामनित्यतां परिजनस्य वर्णयेयुः।।

अर्थ- वह उन नागरकों को रानी के पास महल में ले जाने के लिए पूरी तरह से विश्वास दिलाती है कि इस वक्त महल में कोई नहीं है, महल में पहुंचने का एक सुरंग वाला रास्ता है, पहरेदार गहरी नींद में हैं आदि।

श्लोक (9)- न चासुद्धतेनार्थेन प्रवेशयितुं जनमावर्तयेयुर्दोषात्।।

अर्थ- अगर महल में आने का या जाने का रास्ता आसान न हो या खतरों वाला हो तो रानी के महल के भीतर किसी पुरूष को प्रवेश नहीं कराना चाहिए क्योंकि इससे उस पर किसी प्रकार की विपत्ति आ सकती है।

श्लोक (10)- नागरकस्तु सुप्राषमप्यन्तः पुरमपायभूयिष्ठत्वात्र प्रविशेदिति वात्स्यायनः।।

अर्थ- आचार्य वात्स्यायन के मुताबिक महल में प्रवेश करनें में चाहे किसी प्रकार का खतरा न हो या वहां जाना बहुत आसान हो फिर भी नागरक को वहां पर बिल्कुल नहीं जाना चाहिए क्योंकि यह बहुत ज्यादा खतरा मोल लेने का काम है।

श्लोक (11)- सापसारं तु प्रमदनावगाढं विभक्तदीर्घकक्ष्यमल्पप्रमत्तरक्षकं प्रोषितराजकं कारणानि समीक्ष्य बहुश आहूयमानोऽर्थबुद्धया कक्ष्याप्रवेशं च दृष्टवा ताभिरेव विहितोपायः प्रविशेत्।।

अर्थ- अगर नागरक को रानी के महल में जाना ही हो तो उसे पहले पता कर लेना चाहिए कि उस महल में भागने का कोई रास्ता है या नहीं, महल के साथ बड़ा सा जंगल तो है न, राजा महल में तो नहीं है, पहरेदार गहरी नींद में है या आपस में बात करने में मशरूफ है। इनके अलावा महल में प्रवेश कराने वाली रानी की सहेली या दासी साथ में ही होनी चाहिए।

श्लोक (12)- शक्तिविषये च प्रतिदिनं निष्क्रामेत्।।

अर्थ- अगर नागरक को महल में प्रवेश कराने की सुविधा मिलती है तो उसे वहां पर रोजाना आना-जाना चाहिए।

श्लोक (13)- बहिश्च रक्षिभिरन्यदेव कारणमपदिश्य संसृज्येत।।

freehindipdfbooks.com

अर्थ- महल में आने-जाने वाले नागरक को बातों ही बातों में महल के पहरेदारों से दोस्ती कर लेनी चाहिए।

श्लोक (14)- अन्तश्चारिण्यां च परिचारिकायां विदितार्थायां सक्त मात्यानं रूपयेत्। तदलाभाच्च शोकमन्तः प्रवेशिनीमिश्च दूतीकल्पं सकलामचरेत्।।

अर्थ- महल में आने-जाने वाली किसी दासी आदि को देखकर अगर नागरक को यह महसूस होता है कि यह मुझपर फिदा है तो उसे अपने झांसे में लेने की कोशिश नागरक को करनी चाहिए, उसपर नागरक को झूठा प्यार जताना चाहिए, अगर वह कुछ समय तक नहीं मिलती हो नागरक को ऐसा दिखाना चाहिए कि वह उसके गम में कितना परेशान है। नागरक इसी तरीके को अपनाकर महल की दूसरी दासियों आदि को भी अपने झांसे में लेकर उनसे दूतीपन का काम ले सकता है।

श्लोक (15)- राजप्रणिधींश्च वुध्येत।।

अर्थ- नागरक को अपनी सुरक्षा के मद्देनजर राजमहल में रह रहे राजा के गुप्तचरों को पहचान लेना चाहिए।

श्लोक (16)- दूत्यास्त्वसंचारे यत्र गृहीताकारायाः प्रयोज्याया दर्शनयोगस्तत्रावस्थानम्।।

अर्थ- अगर दूती जा नहीं सकती तथा स्वीकृति सूचक संकेत कर देती है तो नागरक को ऐसी जगह खड़ा होना चाहिए जहां पर दूर से दिखाई पड़ता हो। अगर उसकी आंखें दूती के साथ नहीं मिलती तो उसका वहां पर बेकार में खड़ा होना व्यर्थ है।

श्लोक (17)- तस्मिन्नापि तु रक्षिषु परिचारिकाव्यपदेशः।।

अर्थ- उसी स्थान पर खड़े रहने से जिन पहरेदारों के साथ नागरक की दोस्ती है उन्हें उसी दूती को देखने का बहाना कराना चाहिए।

श्लोक (18)- चक्षुरन्धन्त्यामिंगिताकारनिवेदनम्।।

अर्थ- अगर चाहने वाली दासी आदि नागरक पर बार-बार नजर गड़ाता है तो नागरक को भी अपने भावों आदि को उसे दिखाना चाहिए।

श्लोक (19)- यत्र संपातोऽस्यास्तत्र चित्रकर्मणस्तुद्यक्तस्य द्यर्थानां गीतवस्तुकानां क्रीडनकानां कृतचिह्नानामापीनकाना (कस्य) मंगलीयक्सय च निधानम्।।

अर्थ- जिस रानी के पास नागरक जाता है उसकी दासी की नजर जिस जगह पर पड़े उस जगह पर नागरक को चित्र बनाने चाहिए। ऐसे गीत, श्लोक आदि लिखने चाहिए जो किसी प्रेमिका पर उसके प्रेमी

freehindipdfbooks.com

के प्यार को जाहिर करते हैं। इसके अलावा अपने नाखून और दांत लगी हुई गेंद, गुड़िया जैसे खिलौनों को अपने नाम की अंगूठी के साथ रख देना चाहिए।

श्लोक (20)- प्रत्युत्तर तया दत्तं प्रपश्येत्। ततः प्रवेशने यतेत।।

अर्थ- रानी की उस दासी के द्वारा दिए गए जवाब को देखने के बाद ही नागरक को महल के अंदर प्रवेश करना चाहिए।

श्लोक (21)- यत्र चास्या नियतं गमनमिति विद्यात्तत्र प्रच्छत्रस्य प्रागेवावस्थानम्।।

अर्थ- रानी की दासी जिस स्थान पर ज्यादा चक्कर लगाती हो नागरक को वहां पर छिपकर बैठ जाना चाहिए।

श्लोक (22)- रक्षि पुरूषरूपो वा तदनुज्ञातवेलायां प्रविशेत्।।

अर्थ- नहीं तो नागरक को पहरेदार आदि का भेष बनाकर महल में घुस जाना चाहिए।

श्लोक (23)- आस्तरणप्रावरणवेष्यितस्य वा तदनज्ञातवेलायां प्रविशेत्।।

अर्थ- या फिर नागरक को महल में ले जाने वाले सामानों के बीच में छुपकर महल में चला जाना चाहिए।

श्लोक (24)- तत्रैतद्भवति- द्रव्यामामपि निर्हारे पानकानां प्रवेशने। आपानकोत्सवार्थेऽपि चेटिकानां च संभ्रमे।। व्यत्यासे वेश्मनां चैव रक्षिणां च विपर्यये। उद्यानयात्रागमने यात्रातश्च प्रवेशने।। दीर्घकालोदयां यात्रां प्रोषिते चापि राजनि। प्रवेशनं भवेत्प्रायो यूनां निष्क्रमणं।।

अर्थ- महल में घुसने के और बाहर निकलने के उपाय- महल में ले जाने वाले सामान की गाड़ी में छुपकर, शराब आदि की महफिल में आते-जाते हुए लोगों के साथ महल में घुस जाएं और उनके जाते समय भी उनके साथ ही निकल जाएं। राजमहल की दासियां जब किसी काम को करने के लिए भागदौड़ कर रही हो, पहरेदारों को बदलते समय, राजा के कहीं शिकार या लंबी यात्रा पर जाने के बाद। ऐसे मौकों को तलाशते नागरक को जब यह मौके मिलें तो उसे इनका फायदा उठाना चाहिए।

श्लोक (25)- तत्र राजकुलचारिण्य एव लक्षण्यान्पुरुषानन्तःपुरं प्रवेशयन्ति नातिसुरक्षत्वादा परान्तिकानाम्।।

अर्थ- अपरान्तक देश की रानियां खूबसूरत और संभोग क्रिया में निपुण पुरुषों को अपने महलों में प्रवेश करा लेती थी क्योंकि वहां पर ज्यादा पहरेदार नहीं होते थे।

श्लोक (26)- क्षत्रियसंज्ञकैरन्तः पुररक्षिभिरेवार्थ साधयन्तयाभीरकाणाम्।।

freehindipdfbooks.com

अर्थ- आभीर राजा के महल में आने-जाने वाली रानियां महल के क्षत्रिय रक्षकों को अपने जाल में फंसाकर अपने शयनकक्ष में ले जाती है।

श्लोक (27)- स्वैरेव पुत्रैरन्तःपुराणि कामचारैर्जननीवर्जमुपयुज्यन्ते वैदर्भकाणाम्।।

अर्थ- विदर्भराज की रानियां सिर्फ अपने पेट से पैदा हुए पुत्र को छोड़कर किसी से भी संभोग क्रिया कर लेती हैं।

श्लोक (28)- तथा प्रवेशिभिरेव ज्ञातिसंबन्धिभिर्नान्यैरुपयुज्यन्ते स्त्रैराजकानाम्।।

अर्थ- स्त्री राज्य की रानियां केवल अपने जाति के पुरुषों के साथ ही संभोग क्रिया कराती है दूसरों से नहीं।

श्लोक (29)- ब्राह्मणैर्मित्रैर्भृत्यैसचेटैश्च गौडानाम्।।

अर्थ- गौड़ देश की रानियां अपने नौकर, ब्राह्मण, दोस्त तथा चेटों के साथ भी संभोग क्रिया करा लेती हैं।

श्लोक (30)- अर्थेन रक्षिणमुपगुह्य साहसिकाः संहताः प्रविशन्ति हैमवतानाम्।।

अर्थ- हिमालय के दून के राजाओं की रानियां यहां के बहादुर युवक पहरेदारों को धन का लालच देकर महल में प्रवेश कराती हैं।

श्लोक (31)- परिस्पन्दाः कर्मकराश्चतान्तः पुरेष्वनिषिद्धा अन्येऽपि तद्रूपाश्च सैन्धवानाम्।।

अर्थ- सिंधु देश के महलों में जो नौकर या नागरिक प्रवेश कर सकते हैं उनके साथ वहां की रानियां संभोग क्रिया करती हैं।

श्लोक (32)- पुष्पदाननियोगात्रगरब्राह्मणा राजविदिमन्तःपुराणि गच्छति। पटान्तरितश्चैषामालापः। तेन प्रसंगेन व्यतिकरो भवति वंगांग्लिंगकानाम्।।

अर्थ- अंग, बंग तथा कलिंग देश में महलों में जब ब्राह्मण पूजा-पाठ के लिए आते हैं तो तब रानियां उनसे पर्दे में ही बात करती है और इसी बातचीत में वह उसे संभोग के लिए राजी कर लेती हैं।

श्लोक (33)- सहंत्य नवदशेत्येकैकं युवानं प्रच्छादयन्ति प्राच्यानामिति। एवं परस्त्रियः प्रकुर्वीत्। इत्यन्तःपुरिकावृत्तम्।।

अर्थ- प्राच्य देश की 8-10 रानियां इकट्ठे होकर किसी खूबसूरत और संभोगकला में निपुण युवकों को अपने पास रखती है।

freehindipdfbooks.com

श्लोक (34)- एभ्य एवं च कारणेभ्यः स्वदारान् रक्षेत्।।

अर्थ- इन्ही कारणों की वजह से अपनी पत्नियों की अच्छी तरह से देखरेख करनी चाहिए।

श्लोक (35)- कामोपधाशुद्धान्रक्षिणोऽन्तःपुरे स्थापयेदित्याचार्याः।।

अर्थ- आचार्यों के मुताबिक पूरी तरह से काम-कला में निपुण लोगों को ही रानी के महल और राजमहल का रक्षक बनाना चाहिए।

श्लोक (36)- ते दि भयेन चार्थेन चान्यं प्रयोजयेयुस्तस्मात्कामभयार्थोपधाशुद्धानिति गोणिकापुत्रः।।

अर्थ- गोणिकापुत्र के मुताबिक महल के पहरेदार के वफादार होते हुए भी वह धन के लालच में या किसी तरह के डर के कारण किसी शख्स को रानी के महल में प्रवेश करा दे तो क्या हो। इसलिए उनके मुताबिक सिर्फ काम-कला की परीक्षा न लेकर उसके डर की परीक्षा भी करनी चाहिए।

श्लोक (37)- अद्रोहो धर्मस्तमपि भयाञ्जह्यादतो धर्मभयोपधाशुद्धानिति वात्स्यायनः।।

अर्थ- वातस्यायनः के अनुसार अपने स्वामी के खिलाफ विद्रोह नहीं करना धर्म है लेकिन उसे भी डर से छुड़ाया जा सकता है। इसी तरह से जो बहादुर तथा धर्मात्मा हों उन्ही को रानी के महल का पहरेदार बनाना चाहिए।

श्लोक (38)- परवाक्याबिदायिनीभिश्च गूढाकाराभिः प्रमदाभिरात्मदारानुपदध्याच्छौचाशौ-चपरिज्ञानार्थमिति बाभ्रवीयाः।।

अर्थ- बाभ्रवीय आचार्यों के मुताबिक दूसरे लोगों के द्वारा कही गई बातों का बहाना बनाकर कहने वाली तथा अपने मन की बातों को छिपाने वाली स्त्रियों से अपनी रानी महल की रानियों के व्यवहार और पवित्रता आदि का पता लगवा लेना चाहिए।

श्लोक (39)- दुष्टानां युवतिषु सिद्धत्वात्रकस्माददुष्टदूषणमाचरेदिति वात्स्यायनः।।

अर्थ- वातस्यायन के मुताबिक बुरे लोग तो स्त्रियों को फंसाते हैं इसलिए सदाचारियों को बिना वजह ही बदनाम नहीं करना चाहिए।

श्लोक (40)- तान्याह- अतिगोष्ठी निरंगशत्वं भर्तुः स्वैरता पुरुषैः सहानियन्त्रणता प्रवासेऽवस्थानं विदेशे निवासः स्ववृत्त्युपघातः स्वैरिणीसंसर्गः पत्युरीर्ष्यालु चेति स्त्रीणां विनाशकारणानि।

अर्थ- बहुत ज्यादे गप्पे मारना, नियमों को तोड़ना, स्वेच्छारिता, पुरुषों के साथ निसंकोच साफ भाव से रहना, बाते करना, पति के घर से बाहर चले जाने पर अकेले रहना या बुरी स्त्रियों के साथ मिल जाने से स्त्रियां बुरी बन जाती हैं।

freehindipdfbooks.com

श्लोक (41)- संदृश्य शास्त्रतो योगान्पारदारिकलक्षितान्।।

अर्थ- पराई स्त्रियों को किस प्रकार से फंसाया जाता है उनके सभी तरीकों को इस बताए गए प्रकरण के अनुसार पढ़कर कोई भी पुरूष अपनी पत्नी के बारे में धोखा नहीं खा सकता है।

श्लोक (42)- पाक्षिकत्वात्प्रयोगाणामपायानां च दर्शनात्। धर्मार्थयोश्च वैलोम्यात्राचरेत्पारदारिकम्।।

अर्थ- इस प्रकरण में यह बताया गया है कि पराई स्त्री से संबंध दोनों घरों को बर्बाद कर देते हैं। इसलिए किसी भी समझदार पुरूष को इस बुरे काम में लीन होने के बारे में सोचना भी नहीं चाहिए।

श्लोक (43)- तदेतद्दारगुप्त्यर्थमारब्धं श्रेयसे नृणाम्। प्रजानां दूषणायैव न विज्ञेयोऽस्य संविधिः।।

अर्थ- स्त्रियों के सतीत्व की परीक्षा करने के लिए और पुरुषों की भलाई के लिए ही इस प्रकरण को पेश किया जा रहा है, इसलिए इसमें बताए गए उपायों का प्रयोग किसी को दूषित करने में न किया जाए।

पिछले प्रकरण में पराई स्त्री से संभोग करने वाले लोगों की कोशिशों, दूतियों की भयंकर साजिश, राजाओं की स्वेच्छाचारिता, रानिवास की रानियों की कपट-लीलाओं का जो वर्णन किया गया है, उसका अर्थ यही है कि इन सब रहस्यों को जानकर, पढ़कर, महसूस करके लोगों को धोखे में नहीं फंसना चाहिए। उनका फर्ज है कि अपनी पत्नियों के चरित्र की सुरक्षा सावधान रहकर करते रहना चाहिए।

इति श्रीवात्स्यायनीये कामसूत्रे पारदारिके पञ्चमेऽधिकरणे आन्तःपुरिकं दाररक्षितकं षष्ठोध्यायः।

freehindipdfbooks.com